

सन्तानहीन, चिन्त की भ्रान्ति, शिरःशूल, लुंकाय, नज़ला, मूत्राशय, आम्लाशय, वृकद्वय, हृदय, शिर, मस्तिष्क, यकृत की निर्बलता, तन्द्रा, सन्धिवात, नेत्रों में भूपकी, स्वप्रदोष, शुक्रमेह, प्रमेह, इत्यादि रोग प्रायः आ दवाते हैं ॥

स्मरणा रक्खो कि पृथक २ प्रकृतियों पर हस्तमैथुन का पृथक २ पभाव पड़ता है । हम को जो सैंकड़ों पत्र इस विषय में प्राप्त होते रहते हैं, उन से हम ने यह फैसला किया है, कि ऐसे मनुष्य भी हैं, जो वर्षों तक लगातार हस्तमैथुन या बहुमैथुन करते रहे हैं, परन्तु उन को इतनी हानि नहीं पहुंची, जितनी कि उन मनुष्यों को पहुंची कि जो दो चार मास हस्तक्रिया करते रहे । हमने ऐसे मनुष्य भी देखे कि जिन्होंने दो चार बार हस्तक्रिया की थी और पश्चात् वह स्त्री प्रसंग के योग्य न रहे । जिन लोगों के पेटे, (स्नायु) कमजोर होते हैं उन पर शीघ्र और गहरा प्रभाव होता है, और वह थोड़ी सी अनुचित क्रिया करके भी सारी आयु के लिए बरबाद हो जाते हैं, प्रकृति के विचार से अधिक उष्ण प्रकृति वाले धाह (मैथुन) के विषय में बहुत मज़बूत होते हैं, और उसके आगे गर्म, खुशक, सर्दतर और सर्द खुशक प्रकृतियां समझें । सर्द खुशक प्रकृति सब से अधिक निर्बल होती है बिना किसी ज्यादाती के भी उसकी बाह (मैथुन शक्ति) बहुत कमजोर होती है । यदि किसी दुरा चार में वह प्रस्त हो जावे तो फिर क्या कहना है । ऐसे लोग अपनी मैथुन शक्ति की वृद्धि के लिए व्यर्थ परिश्रम करते रहते हैं । स्वाभाविक शक्ति से कैसे बढ़ सकते हैं ।

शोक तो यह है, कि स्त्री पुरुष दोनों में यह दुरा व्यसन बर्त मान है । डाक्टर फुट साहिब ने दो लड़कियों का वर्णन किया है कि जो हर प्रकार की निर्बलता में प्रस्त थी । उन का पिता ज डाक्टर साहिब के पास चिकित्सा के निमित्त आया, तो उस रोगघृतान्त सुना, और पीछे उन लड़कियों को गुप्त पत्र लिखा ।

क्या तुम इस बुरे व्यसन में प्रस्त हो, बेचारी लड़कियों ने अपना दोष स्वीकार किया, फिर डाक्टर की आज्ञा से उन्होंने इस बुरे व्यसन को त्याग दिया, इस का फल यह हुआ, कि सम्पूर्ण व्याधियां, रोम रोम निद्रानाश, पट्टों की निर्बलता आदि सब दूर हो गईं। यह बड़ी मूर्खता है, कि लोग वैद्य के पास जाकर असल रोग को भगद नहीं करते और यह कहते हैं, मेरा यकृत निर्बल है, या मुझ को प्रमेह है, या आंखें निर्बल हैं, या शिरःशूल है, या मैं दुर्बल होता जाता हूं। भोला डाक्टर उन के कथनानुसार इन्हीं रोगों का इलाज करने लग जाता है, मूत्र कारणा हस्तमैथुन, अथवा बहुमैथुन दूर नहीं किया जाता। सम्भव है कि रोगी इस महा हानि कारक व्यसन प्रभाव को न जानता हो, किन्तु यह सम्पूर्ण रोगों का घर है। कामवरति शास्त्र द्वितीय भाग में इस का वर्णन भली प्रकार करेंगे, अतः चिकित्सक को चाहिये कि अच्छी तरह पूछ करके मूत्र कारणा को दूर करे ॥

कतिपय डाक्टरों की सम्मतियां ।

डाक्टर डैसेलैण्ड—एक ऐसे पुरुष के विषय में लिखते हैं के जिसे चर्ई (तपेदिक) हो गया था, और इस दशा में भी यदि उसे अकेला छोड़ दिया जाता तो वह हस्तमैथुन कर बैठता था। परिणाम यह हुआ कि तीन मास के पश्चात् मर गया ॥

एक डाक्टर—लिखता है, कि एक युवक अपना मूत्र परीक्षार्थ लाया और परीक्षा से ज्ञात हुआ कि वह पथरी रोग में अस्त है। उस ने १६ साल की आयु से लेकर १९ वर्ष की आयु तक हस्तमैथुन किया था। उस की शारीरिक अवस्था महा रही थी। बहुत से डाक्टरों ने हस्तकार पागलों का वर्णन किया है। अमरीका के एक धनाढ्य पुरुष का बड़का हस्तक्रिया से पगला हो गया। इसी प्रकार एक पादरी का लड़का जिस ने पाठशाला में बहुत अधिक हस्तमैथुन किया था पगला हो गया। पागलस्त्रानों में बहुधा पागल हस्तकार

होते हैं। डाक्टर वाइनल एक चित्रकार का वर्णन करते हैं, कि उसने सारी निपुणता हस्तमैथुन के द्वारा नष्ट करदी थी और अन्त में पगला हो गया था ॥

डाक्टर एनीवर्ट ने एक खड़की का वृत्तान्त लिखा है, कि वह धकियां चराया करती थी, स्वतन्त्रता के कारण वह दो वर्ष तक खूब हस्तमैथुन करती रही। जिस के कारण उस की कामवासना बहुत प्रबल हो गई थी। किञ्चित् कारण से भी उस की कामाग्नि प्रचण्ड हो जाती थी, और यह विचरा होती थी। उस का सिर और छाती आदि अर्द्ध अंग बहुत दुर्बल हो गए थे। अन्त में यहां तक नौवत पहुंची कि केवल पुरुष के देखने, अथवा उस के स्पर्श हो जाने से उस की प्रवृत्ति भड़क उठती और स्वादित हो जाती। अन्त में हस्पताल जाई गई परन्तु उस के वास्ते कुछ नहीं हो सका था वापिस अपने घर भेजदी गई जहां पहुंचते ही थोड़ी देर पीटे मर गई ॥

हस्तकार अन्त में इतना दुर्बल हो जाता है कि वाज्र समर एक ही बार के भोग करने से मर जाता है। डाक्टर एन्डरसन एक ऐसे मनुष्य का वर्णन करता है, कि जिस का एक वेश्या के घर में भोग के पीछे तुरन्त मूर्च्छा हो गई थी, और वह उसी दशा में हस्पताल जाया गया था ॥

डाक्टर सैरसस—एक ऐसे ही मनुष्य का वर्णन करता है जो हस्तमैथुन के साथ बहुमैथुन भी करता था। एक दिन वह वेश्या के घर में सारा दिन रहा और सायन को मूर्च्छित होगया, और तीसरे दिन मर गया ॥

डाक्टर गीवोट—(Guillot) एक ५२ वर्ष के मनुष्य का जिक्र करता है जो इस बुरे व्यसन के कारण पागल होगया। लोकाइन्दी बहुत बढ़ी थी और वह हर समय कामालुग रहता था ॥

स्मरण रखो कि बलवान अपने आप को धरसें रख सकता है, परन्तु हस्तमैथुन कर्ता तुरन्त कामातुर हो जाता है ॥

डाक्टर डैसेल्यण्ड—(Deseland) ने एक लड़की का वर्णन किया है, जिसे छोटी आयु में ही हस्तमैथुन का व्यसन पड़ गया था। और अन्त में उस की रुचि इतनी बढ़ गई थी कि वह विवश होकर बाजार में बैठ गई, और उस दशा में भी हस्तक्रिया को न छोड़ सकी, परिणाम यह हुआ, कि मृत्यु ने ही उस को इस व्यसन से छुटकारा दिया ॥

डाक्टर सैस्वरियर—(Seliwer) एक मनुष्य का वर्णन करते हैं, कि हस्तमैथुन के कारण उस के शरीर में केवल हड्डियों का ढांचा ही बच गया था, आंखें अन्धर हो गई थीं और लगभग अन्धी थी, हकबापन, और दन्त निर्बल थे, निदान वह इतना दुर्बल होगया कि हिल न सकता था। 6 मास तक इस दशा में रह कर मर गया ॥

डाक्टर टिस्सट—(Tissat) एक बर्दासाज का वृत्तान्त बिखरते हैं, कि यह पहिले बहुत निपुण और स्वस्थ था। परन्तु 17 वर्ष की आयु में उस ने हस्तमैथुन आरम्भ किया, कोई दिन न छूटता था, किसी 2 दिन 2, 3 बार तक कर बैठता था। निदान उस का मस्तिष्क (दिमाग) इतना निर्बल होगया, कि जब वह हस्तक्रिया करता तो पीछे मूर्च्छित होजाता। शिर पीछे की ओर झटक जाता श्रीवा फूँड जाता। यह मूर्च्छा दशा दिनों दिन बढ़ती गई, परन्तु यह मूर्च्छा तब भी न लभभा, और उसकी काम उत्तेजना इतनी बढ़ गई, कि किञ्चित् छूने से भी वीर्य्य पाव होजाता। स्त्री को देखते ही वीर्य्य निकल जाता, निदान यह 6 से 12 बर्ग तक मूर्च्छित रहने

लगा। इस दशा में कुछ खा पी नहीं सका था। कटि में असह्य पीड़ा होती थी, दुर्बलता इतनी बढ़ गई थी, कि वह मुर्देह सा मालूम होता था। रंग पीला, काम काज के अयोग्य, मुँह से लार और नाक से खून बहता था, पेशिया भी आरम्भ होगई और प्रत्येक दस्त के साथ वीर्य भी टपकता था। श्वास लेना दुभर होगया, कहां तक उस के दुःखों का वर्णन किया जाय, महा कष्ट भोग कर और देखने वालों को शिन्ना देकर मर गया ॥

डाक्टर जिमरमैन—(Gummerman) एक मनुष्य का जिस को पहले हस्तमैद्युन से भृगी का रोग हुआ, और पश्चात् मृत्यु आई वर्णन करते हैं। डाक्टर एक्टन (Acton) हस्तकार के लक्षण इस प्रकार लिखते हैं :—“रंग पीला, दुबला, और एक निर्बल कदर्य्य रूप का होजाता है। आँखें भीतर धंस जाती हैं, पुतलियां फैल जाती हैं, कायरता इस का आवश्यक फल है। हस्तकार दूसरे मनुष्य के साथ आँख तक नहीं मिला सका। लज्जामान, और एकान्त प्रिय हो जाता है, यदि कोई वाक्य अच्छी स्मरण शक्ति रखता हो, और फिर विस्मृति का रोग हो जाय तो जानलो कि वह हस्तकार होगया ॥

फिर यह लिखता है, कि इस दुर्च्यसन से नवयुवक वृद्धे, मुखपीत, सुस्त मूर्ख, नपुंसक, कटि झुकी हुई, अधरंग और मन्दाग्नि वाले हो जाते हैं ॥

डाक्टर हाफमैन साहिय—का कथन है, कि हस्तकार को स्वप्नदोष, शिर तथा कटि में पीड़ा, दृष्टि व स्मरण शक्ति हीनता, आत्मिक, शारीरिक, और मान्सिक निर्बलता, बुरे भयंकर स्वप्नों का आना, दिमागी चक्कर, कितनों को पागलपन, कितनों को गंठिया, कितनों को आमाशय और छाती की वेदना हो जाती है। वीर्य बिना इच्छा बहने लगता है। इन्दी निकम्मी हो जाती है, शीघ्रपतन, स्व-और अन्त में पूर्णतः नपुंसक (नामर्द) बन जाता है ॥

डाक्टर टिसोट—(Tissot) का कथन है, कि और बहुत सी खराबियों के भिन्न एक यह बहुत बड़ी खराबी है कि मनुष्य स्त्री भोग के योग्य नहीं रहता, और बाजों को चैतन्यता नहीं होती, अथवा अपूर्ण होती है, अथवा होकर शीघ्र ही मिट जाती है । चैतन्यता होते ही, या स्त्री के आलिंगन आदि करते ही, या केवल विचारों के उत्पन्न होते ही धातु निकलना आरम्भ हो जाती है ॥

डाक्टर समित्थ— है, चर्द रोग (तपदिक) के एक हजार रोगियों में से प्रायः १८६ के रोग का कारण बहु मैथुन था, १८३ रोगियों का कारण हस्तमैथुन था, २२० रोगियों का स्मदोष व शुकपतन था, अन्य और कारणों से रोगी थे । २२८ पागलों में २४ मनुष्य केवल हस्तमैथुन से पागल हुए थे । वास्टर के पागलखाना के १६६ पागलों में ४२ केवल हस्तमैथुन से इस दुर्वस्था को पहुँचे थे ॥

डाक्टर मिलर (Miller) ने अत्यन्त स्पष्ट रूप से मैथुन की बुराइयों का वर्णन किया है । जो इस साधारण पुस्तक में नहीं आसक्तों । संचित लिखते हैं :—

लिंगेन्द्री की खराबियाँ ॥

अण्डकोष लटक जाते हैं । बाज समय उन में पीड़ा होती है । लिङ्गेन्द्री में सरसराहट प्रतीत होती है । उत्तेजना कम, शीघ्रपतन, विना आनन्द स्वप्नदोष, प्रमेह, नपुंसकता हो जाती हैं । खूबि सर्वथा नहीं होते । यदि कुछ होती भी है तो प्रविष्ट करते ही वीर्य निकल कर लज्जा का सामना होता है ॥

आमाशय की खराबियाँ—कोष्ठवद्धता (अघज) सर्वैव होती है । कमी पेशिया भी हो जाती है । स्मरण रहे कि इस कोष्ठवद्धता का इलाज रेचक गोलियों से न करना चाहिये, यदि आव-

शय्यता हो तो मलभेदकवटी भी दें, परन्तु अधिकतर व्यायाम करना और असल कारण को दूर करना, और पुष्टी वायक औषधियाँ खाना, फलों का अधिक सेवन करना, इस का इलाज है ॥

हस्तमैथुन—ये मूत्राशय मसाना निर्बल होजाता है, मूत्र बार बार आना है, स्तम्भन नहीं होता, गुर्दे के रोग या प्रमेह या ब्राइट डिजीज (bright-disease) (पेसाव कम और शरीर पर शीथ आरम्भ होजाता है) जुवा कम होजाती है, पाण्डु, उदगार, यकृत की निर्बलता, घड़का, जलन, घोर मन्दाग्नि, कमजोरी, दन्तरोग, यक्षिपलितरोग, बालभङ्ग, जुकाम, कुरुपता, आंखों का घसना, इन्माद, निदान लूँट होकर मर जाता है ॥

पृष्ठवंश—(रीढ़ की हड्डी) के रोगः—अधो भाग में शूल, कटि में शूल, टांगों की निर्बलता, प्रायः निचले भाग में अधरंग हो जाता है । डाक्टर साहिब लिखते हैं, कि मृगी और मूर्खों के रोगी बहुधा हस्तकार ही हुआ करते हैं । एक बार एक बालक को स्कूल में मृगी आरम्भ होगई । उस के आता पिता उस का कारण परिश्रम समझते थे, परन्तु मैंने ध्यान रखना आरम्भ किया, और उसे पकड़ा और समझाया, किन्तु वह मूर्ख इस दुष्क्रिया को त्याग न सका, निदान पागल खाने में भेजा गया और वहाँ मर गया ॥

मस्तिष्क विचारः—मस्तिष्क निर्बल, चित्त का अमयुक्त होना, हर समय बुरी चिन्ताओं में प्रवृत्त रहना, चित्त का स्थिर न होना, मन को अपने वष में न रख सकना, दृष्टि शक्ति, श्रवण शक्ति धीन, सर्व इन्द्रियाँ निर्बल, स्वर भङ्गा, दूदा फूटा, कानों में शंय २, स्वभाव चिड़ चिड़ा, शारीरिक और मानसिक दुर्बलता बनी रहती है । और फिर बुष्ट कामनाओं का दास बन जाता है । बाज़ समय कामनाएँ कर लेता है । विद्यार्थियों को जब अत्यन्त दुर्बल देखो तो

उसका कारण बहुत परिश्रम न समझो । वाज़े लड़कों को तो स्कूल ही छोड़ना पड़ता है, जोग कहते हैं, इस ने बड़ा परिश्रम किया है, किन्तु नहीं ॥

पाठक गण !

इस ने दूसरी ओर वी० ए० पास कर लिया है, अब पढ़ने की आवश्यकता ही क्या है, अस्तु कहां तक वर्णन किया जाय, हस्त मैथुन की इतनी बुराईयें हैं, कि उसके सविस्तर वर्णन के लिए एक बड़े ग्रन्थ की आवश्यकता है जो लिखा जा रहा है ॥

हमारे पास इसके बुरे परिणाम के इतने पत्र आते हैं, कि यदि उन सब का वर्णन किया जाय तो एक भारी ग्रन्थ ही जाय और अत्येक पढ़ने वाला एक २ पत्र को पढ़ कर हैरान हो जाय । सारा संसार इस बुरी क्रिया से व्याकुल है । एक बार एक नवयुवक को देख कर तो मेरे रोंगटे खड़े होगए । एक रोगी की चिकित्सा के लिए मैं गया हुआ था, वहां मैंने देखा कि वह २० कदम भी न चल सकता था, तुरन्त श्वास बढ़ने लगता था, उसकी दुर्बलता इतनी बढ़ी हुई थी कि उसका जीना आश्चर्य मालूम होता था । उस ने बताया कि ८ वर्ष की आयु से लेकर १७ वर्ष की आयु तक इतना हस्तमैथुन किया कि कई बार तो ३-४ बार दिन में किया करता था १५ वर्ष की आयु में विवाह हुआ १६ वर्ष की आयु में पक्षाघात (अघरंग) हुआ, २२ साल की आयु में फिर अघरंग का आक्रमण हुआ, २३ साल की आयु में फिर दौरा हो गया, पंचेचिन्म आरम्भ हुई, २६ साल की आयु में घोर घड़का आरम्भ हुआ, और इस समय इस को श्वास रोग, यकृत की बुद्धि, मन्दाग्नि, पेट में भारीपन और बोझ, यकृतशूल, कटिशूल, बृकद्वै की और दर्द, पिंडुलियों में दर्द, पेट में दर्द, स्मरण शक्तिहीन, दुर्बलता इत्यादि

रोग थे, नक से शिख तक वह दुर्बल था। और मेरे देखने के शीघ्र महीनों के पीछे उस का देहान्त हुआ। आज कब ऐसा समय आगया है, कि सैकड़ों पीछे ६६ इस दुर्बल के शिकार है, फिर क्यों न प्रत्येक जन धातु पुष्टि की औषधियां ढूंढना फिर ॥

लड़कों से प्राकृतिक नियम के विरुद्ध व्यभिचार करनेकी भी ऐसी ही हानियां है। प्रत्युत इस में भी अधिक है इस लिए उसका पृथक वर्णन नहीं किया गया। यह प्रकृति नियम बरुद्ध निरुद्धेदेह भारी पाप है ॥

—०—

बहु मैथुन ।

हिन्दू शास्त्रों में लिखा है कि तरया पुरुष और स्त्री का जब विवाह हो, और स्त्री ऋतुस्नान से शुद्ध हो तो पुरुष केवल एक बार गर्भाधान करे। और गर्भ स्थित होन के पश्चात् जब तक बाबक उत्पन्न होकर माता का दूध पीना न छोड़े तब तक दोनों भोग करने से बचे रहें। इस विधि से मानो दार्द वर्ष में एक बार नौवत पहुंचती है। और यह तो हुई धर्मशास्त्र की आज्ञा। हमें अपने पाठकों को यह कर्मांगोचर करना है, कि कितन दिनों के पीछे भोग किया जाय, जिस में स्वास्थ्य में कोई फर्क न आवे। उपर्युक्त नियम बहुत उत्तम है, परन्तु मनुष्यों की दया आज कब बहुत गिरी हुई है ॥

बहुमैथुन—हमारे देश में इतना बढ़ गया है, कि जिस का कारण असम्भव है। एक बार मैंने एक महाशय के पत्र को पढ़ कर बातों में उंगली धवाई, उस पत्र में लिखा था, "कि सात आठ साब तक मैं लगातार ५, ६ बफा दैनिक भोग करता रहा" मैं सोचने लगा, कि इतना ब पुरुष और सुराक खाने वाला यदि किञ्चित् भी अपने आप को रोकता तो आज इस को भेद तक खाने

की क्या आवश्यकता पड़ती ? अपने यत्न से वह संसार को हैरान करता ।

बहुमैथुन—ने भारतवासियों का लत्यानाप कर दिया है । स्त्री के मासिक रजोधर्म के दिनों में, या बीमारी के दिनों में, वेश्याओं से मुँह काबा करते हैं, सार प्रायः रजस्वला की भी परवाह नहीं करते । बड़े २ शुद्धाचारों कहलाने वाले उपदेशक महाशय व दूसरी स्त्री की ओर हाँप भी न करन वाले अपने घर में बहुमैथुन से नहीं रुकते ॥

एक डाक्टर साहब लिखने हैं:—शोक ! कि कितने विवाहित जोड़े हैं जिनका स्वास्थ्य भोग के नियमों की अज्ञानता से तबाह और बरबाद हो चुका है । बिना किसी सोचन के वह क्या कर रहे हैं ?

वह असावधानी से अपनी रुचियों की बागडोर ढीली छोड़ देते हैं, और पागलपन से दुःख और शोक की ओर जाते हैं ॥

याज्ञ जोग इन मूर्खता के कारण बहुमैथुन करते हैं, कि कहीं स्त्री यह न समझ ले कि इन में बख नहीं है । मूर्ख यह नहीं जानते कि जब बहुमैथुन के कारण न मर्द हो जावेंग तो उन समय सर्वथा ही इच्छा पूरी न कर सकेंगे, फिर क्या होगा । यहाँ यह लिखना आवश्यक मालूम होता है कि स्त्री बहुमैथुन से कभी प्रसन्न नहीं होती है । बहुमैथुन से व घृणा कती है । पूर्ण स्वास्थ्य होना इस के लिए अत्यन्त आनन्द का हेतु है, और शैथिल्य को स्त्री स्वखित होती नहीं, यदि हो तो थोड़े काल में सुदा होजावे । १५ दिन पीछे एक बार प्रसन्न करे व ले काँ दैनिक ४ बार अपना आप गवाने वाले की अपेक्षा अधिक प्रसन्न करती है ॥

शरीर का सार वीर्य्य है । बजिर की ल बून्द के धरावर वीर्य्य की एक झुंड होती है । वह अपना सम्पूर्ण रत्न है कि इस से शरीर

उत्पन्न होता है। इस को बरबाद करना फेसी मूकता का काम है। रिसाला वीर्य की पर ॥=) में हमारे यहाँ से मंगाकर पढ़ें। डाक्टर कारपेन्टर (Carpenter) साहित्य लिखते हैं, कि बहुमैथुन से पढ़ों की क्रिया बार २ होने से स्वास्थ्य की हानि पहुंचाने वाले हेतु उत्पन्न होते हैं ॥

डाक्टर एक्टन (Acton) साहित्य न अच्छी तरह दिखाया है, कि मैथुन का प्रभाव अवश्य पढ़ों के द्वारा मस्तिष्क तक पहुंचता है। और दुर्बल-जन प्रायः इस भाघात से मर भी जाते हैं। देखिए ! कि ससा (करगोश) स्वल्पित होने के पश्चात् एक मोर को गिर पड़ता है। मैथुन से बल नष्ट होता है, और पढ़ों का भाघात पहुंचता है, शारीरिक और आत्मिक बल तथा भोज निकल जाते हैं। तब आप समझ सकते हैं कि बहुमैथुन कितना हानिकारक होता है ॥

बहुमैथुन की कहानियां ।

डाक्टर एक्टन साहित्य लिखते हैं, कि जीवन वायक रत्न का अधिकता से निकलते रहना और प्रसन्न से उत्पन्न हुए पढ़ों के जोष का बार २ होना बहुत ही हानिकारक है। प्राय नियम से रहने वाले स्त्री पुरुष भी विवाह होते ही दैनिक मैथुन आरम्भ कर देते हैं, और उस समय तक करते रहते हैं, जब तक कित्रीमारी उन्हें धिक्का नहीं कर देती। वह इलाज कराते हैं, वैसे उन के साधारण रोग का इलाज करता है, बहुमैथुन के विषय में एक प्रश्न भी नहीं पूछता, और न ही बचे रहने की आज्ञा करता है। निदान मन्दाग्नि, पढ़ों की निर्बलता, आदि रोगों से उस को आराम नहीं आता है। यदि रोगी किसी ऐसे डाक्टर के पास आवे जो कि उस को बता दे कि यह समस्त रोग बहुमैथुन के कारण है, तो वह विस्मित होता है। वह धान पुरुष को पहिले पहिले बड़ी भारी खराबी नहीं होती और इस पह समझते हैं, कि इस से कोई हानि न होगी, परन्तु गीः

नहीं तो कुछ देर में उस को इस का फल भवश्य भुगतना पड़ता है । वाज रोगों का कारण हम लोगों को मालूम न होता था, अब निश्चय हो गया है कि उन रोगों का कारण बहुमैथुन है ।

भरस्तू ने एक बार सिकन्दर को लिखा था, “ कि काम उच्छे-
जना के बधीभूत न हो, यह प्रकृति शृंखर की है ” ॥

सुफरंहउलकलूष (यूनानी पुस्तक) में लिखा है, बहुमैथुन सब से अधिक हानिकारक है और यहुभोग से यह खराबियां उत्पन्न होती हैं:—पट्टों की निर्बलता दृष्टि शक्ति की हीनता, प्रमेह स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, पीठ में दर्द, धडका, मस्तिष्क की निर्बलता, यकृतशूल अजीर्ण, शरीर का दुर्बल होना, व्याकुलता, सन्तान का न होना या दुर्बल होना, घातु का पानी के सदृश पतला होना, कुरूपता, चेहरे पर मुर्दापन, नेत्रों में अशोभा, और प्रत्येक काम से जी उकताना, किसी से बात करने को जी न चाहना, माखों से पानी जाना, दर्द शिर निरन्तर, नजला, जुकाम मूत्राणय की निर्बलता, आमाशय की निर्बलता, वृद्धे की निर्बलता, यकृत की निर्बलता, हृदय की निर्बलता और स्मरण शक्ति की हीनता इत्यादि ० ॥

क्रिस्ती ने सत्य कहा है:—“ वातु शक्ति हैं, शक्ति ही जीवन है, शक्ति ही तरुणार्थ है, शक्ति की कमी बुढ़ापा है, और शक्ति का ही नाश मृत्यु है ” ॥

डाक्टर फुट साहिव का कथन है —“ कि बहुमैथुन स्त्री को कम और पुत्र को अधिक हानि पहुंचाता है । क्यों कि पुरुष के बहुमैथुन में स्त्री भाग नहीं लिखा, करती । एक और डाक्टर साहिव लिखते हैं कि बहुमैथुन से ऐसे दुरे फल पैदा होते हैं जिनसे स्त्री और पुरुष दोनों का नाश होजाता है । स्त्री पुरुष इसके स्थान में कि संसारिक मृत्यों को दण्डभोग करके पूरी आयु को पहुंचने, थोड़ी

आयु में ही संसार से बच सकते हैं। यह बात अधिक व्याख्या की
मुहताज नहीं है ॥

कितने समय पश्चात् भोग करना चाहिये ॥

अब इस स्थान पर क प्रतीत होता है, कि बहुमैथुन और उचित मैथुन का कोई सीमा नियत की जाय, जिससे मनुष्य उचित सीमा के अन्दर रहकर पदमैथुन से बच सकें। वैद्यक चिकित्सा ग्रन्थों में लिखा है, कि अस्थ और बलवान् पुरुष को प्रति चौथे दिन मैथुन करना चाहिये, लेकिन ब्राह्मणवृद्ध के दो माहिनों में हर पन्द्रहवें दिन इस क्रिया को करना उचित है। अब इस सिद्धान्त पर अच्छी तरह विचार करना चाहिये कि यह ब्राह्मण युवा तन्दुरुस्त और बलिष्ठ ब्राह्मणों के वास्ते है। मानो युवा, से भी युवा स्वरथ से भी अस्थ, हृद से भी हृद, आदमी को अपना जीवन और स्वास्थ्य स्थिर रखने के वास्ते इन नियमों का पालन करना चाहिये। तब महाशयो ! जरा सोचने की बात है कि सप्ताह में दो बार जब स्वस्थ और बलवान् के वास्ते ब्राह्मण है, तो दुर्बल इस्तकार और आजकल के रोगियों के वास्ते इतना करना कितना हानिकारक है। और क्या ऐसे अनुष्यों को कोई भी औषधि लाभ पहुंचा सकती है ? कदापि नहीं ! चाहे वह कैसी उत्तम स उत्तम औषधि खाने कोई लाभ न होगा। शोक ! सामर्थ्य तो ऐसी हो कि बिना स्तम्भन बटिका खाए मनोर्थ पूरा न कर सके, परन्तु मैथुन प्रति दिन एक बार से अधिक करने से भी बाज न आये। मुझे हंसी आया करती है, जब कि प्रायः भीमान् लिखा करते हैं, कि एक बार तो सम्भोग होजाता है, परन्तु दूसरी बार उत्तेजना नहीं होती। शोक है ऐसे मनुष्यों पर। जालीनूय ने एक स्थान पर लिखा है, कि छः मास के पश्चात् मैथुन करना चाहिये। दूमरीसना से

ऐसे एक मनुष्य ने पूछा कि स्त्री भोग कितने दिनों पश्चात् करना चाहिये? उसने उत्तर दिया कि एक वर्ष के पश्चात् । उसने कहा जो एक सात न रह सके, आपने फरमाया, छैः मास के पीछे करे । उसने फिर पूछा कि जो छै मास भी न रह सके, आपने कहा तीसरे महीने करे । उसने कहा जो इतना न रुक सके, कहा कि हर मास में एक बार मैथुन करे । युवक को शान्ति न हुई और कहा जो इतना भी सन्तोष न कर सके, फरमाया कि हर सप्ताह मुँह फाजा करे । युवक ने इस पर भी पूछा कि जो इतनी देर भी न रुक सके? आप ने कहा चौथे दिन भोग करे । युवक ने फिर भी वही प्रश्न किया जिस पर (रोखउखरईस बूमखीसेना) ने फरमाया कि जो उसका जी चाहे करे परन्तु भी तैय्यार रखे ॥

तात्पर्य यह है कि दैनिक भोग करने वाले की साय २ रहता है, न जाने कब करके । बूमखी सेना ने बड़े बलवान् पुरुष के लिये चौथे दिन की आज्ञा दी है ॥

फिर साहिवो?

आज कल के पुरुष हीन, घातु क्षीण रोगियों को क्या साह तक भी करना चाहिए । डाक्टर साहिब लिखते हैं, कि दैनिक भोग बलवान् से बलवान् मनुष्य के वास्ते जो आज तक हुए हैं बहुत है । येने मनुष्य भी हैं, जो वरों तरु इस क्रिया को अपनी शक्ति में बिना किसी विशेष घणनाय कमी के कर सकें ह, परन्तु एक समय आ जाता है, कि वह निबंल होने आरम्भ होते हैं । सप्ताह में दो बार

से मनुष्यों के वास्ते बहुमैथुन है । सप्ताह में एक बार सीमा बल कहा जा सकता है । और केवल स्वस्थ मनुष्य २५ साह की आयु से ४० साह की आयु तक इसके अज्ञकार कर सकते हैं ॥

२१ वर्ष तक सर्वथा मैथुन न करना चाहिये, २१ से २५ के भीतर यदि आवश्यकता हो तो दसवें या पन्द्रहवें से अधिकन करना चाहिये। जितनी अधिकता की जावेगी उतना ही बल कम होता जाएगा। यदि बुढ़ापे तक नीरोग रहना चाहते हो, तो तरुणाई में वीर्य को नष्ट न करना चाहिये ॥

डाक्टर ऐक्टन (acton) साहिब लिखते हैं, कि यदि कोई पूछे कि मैथुन में अधिकता क्या है ? तो मैं उत्तर दूंगा कि जो और कामों में अधिकता है। अधिकता वह है जिससे स्वास्थ्य को हानि पहुंचती है। मेरे तल्लुवें में परिश्रमों सानासिक काम करने वाले विवाहित पुरुष किञ्चित ही पैसे होंगे जो कि सप्ताह में एक बार से अधिक इस काम में प्रवृत्त हो सकते हैं। हठ और स्वस्थ मनुष्यों के लिए यह नियम है ॥

डाक्टर ट्राल (trall) साहिब ने वही नियम लिखे हैं, जो कि हिन्दू शास्त्रों में अंकित है। और वह यह भी लिखते हैं, कि जो काम वासनाओं में फंसे हुए है वह इन नियमों का पाबन नहीं कर सके। और जो लोग नियमानुसार जीवन व्यतीत करते हैं, जिन का सिद्धान्त है, कि जीने के लिए खाओ, न कि खाने के लिए जिओ, व्यायाम करते हैं, स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का पाबन करते हैं, शारीरिक स्वास्थ्य का उन्हें पूरा ध्यान होता है, तो वह प्रायः यह काम भी नियमानुसार करते हैं। जो दुर्बल होते हैं, कोई काम नियमानुसार नहीं करते, और स्वास्थ्य जिनकी दृष्टि में कुछ नहीं, आहार, वस्त्र, नियमित व्यायाम का जिन्हें ध्यान नहीं, वह सदैव बहु-मैथुन किया करते हैं। इसके अतिरिक्त जो लोग इस काम पर लगे रहते हैं, उनके वास्ते कोई नियम नहीं है। राजाओं नवाबों का कोई दिन खाली नहीं जाता है, परन्तु इनका ध्यान इसी और होता है, और वह हजारों रूपए बल लाभ करने के बिये लचर करते रहते हैं। इस पर भी वह बड़ी आयु में स्त्री के योग्य नहीं रहते ॥

डाक्टर ट्राव साहिब का कथन है कि, मेरा यह विश्वास है कि श्वेत ही ऐसे हाने जो सप्ताह में एक बार बिना स्वास्थ्य की खराबी और जवानी में बुढ़ापा बाने के कर सकते हैं ॥

मुफ़र्रहउल्कलूब में बिना है, कि पिच, कफ़ प्रकृति वाले काम में अधिक प्रवृत्त हुआ करते हैं, और मैथुन से कम हानि पाते हैं। परन्तु घातज प्रकृति वाले उनसे कम और कफ़ज व वानज प्रकृति वाले इस क्रिया में असमर्थ होते हैं ॥

मैथुनाधिक्य के लक्षण

डाक्टर बिलेमण्ड (Lilamond) साहिब के वचन विशेष माननीय हैं। अर्थात् जिस भोग के पश्चात् आनन्द आवे, शरीर में स्फूर्ति और नूतन शक्ति हात हो, शरीर अधिक पुरतीबा और काम करने के योग्य हो, जबकि व्यायाम या मानसिक काम की अधिक खचि, बिंगेइन्द्रिय में घोड़ी बेर पीछे शक्ति और अनुभव हो, तो हमें समझना चाहिये कि सम्भोग स्वास्थ्य के नियमानुसार हुआ है। यदि भोग क्रिया के पीछे थकान, शिर का भारीपन, अनुभव हो तो जान लेना चाहिये कि उचित सीमा उलंघन की गई ॥

क्यों साहिब ! कृती पर हाथ रख कर बताओ तो सही, कि कभी तुमने इस निबम की पालना की है, फिर तुम्हें सदा औषधियों की कता न रहे तो क्या हो ?

दूसरा नियम—अधिकता जानने का यह भी है कि जब तक सच्ची खचि न हो सम्भोग न करें। सच्ची खचि वह है, जो बिना खी के साथ हंसे दोबे बिना किस्सा कहानियों के सुनने, बिना में ऐसे विचारों को चाए, अपने आप हो और मनुष्य को मैथुन की ओर प्रेरित करे ॥

संभरना रहे कि थोड़ी सी थकावट और सुस्ती जो थोड़ी देर के वास्ते जान पड़ती है उस से बेफ़दाली (अधिकता) जाहिर नहीं होती, कमजोरी ज्यादा, सुस्ती, बदासी अधिकता प्रगट करती है। जब कि भोग के पीछे शिर में दर्द होने लगे, तो यह अत्यन्त दुर्बलता का लक्षण है। इन नियमों पर ध्यान देने और सोचने विचारने से ज्ञान होगा, कि प्रति लैफ़्टा २६ मनुष्य उचित सीमा से बढ़ कर करने के कारण कैसे २ रोगों से फल रहे हैं। आज कल के निर्बलों के लिए कई महीनों के पश्चात् नियमानुसार कश जासका है। हम जानते हैं कि विषयी लोग तरह २ के कष्ट उठाते हुए भी इतनी देर सन्तोष न कर सकेंगे, परन्तु यह उन की इच्छा है कि स्वार्थ्य और आनन्द की ओर पग धरें, अथवा रोना और दुःख की ओर। विषयी पुरुषों के वास्ते जो किसी की नहीं सुना करते इतना और निषेधन कर देते हैं कि यदि हमारी सम्मति को नहीं मानते तो परमेश्वर के लिए इतना तो अवश्य करें, की महीनों में एक दो बार, और अधिक से अधिक चार बार से कभी न बढ़े अन्यथा शीघ्र ही हाथ मल २ कर रोना पड़ेगा, और निश्चय जानों कि वह दिन शीघ्र आने वाला है, जब कि तुम वर्ष में एक बार भी नहीं कर सकोगे, नपुंसक कहलाओगे, या ऐसी कठिन शीघ्रपतन रोग में अस्त होने कि बस लज्जा ही पहले पड़ा करेगी। उस समय तुम्हारा जीवन बोक प्रतीत होगा, काश! की हमारी शिक्षा को पहले ही मान जाओ ॥

कलैब्यता के अन्य कारण ॥

हस्तमैथुन, अनुचित व्यवहार व मैथुनाधिक्य ही वीर्य्य सम्बन्धी सर्व रोगों के विशेष कारण हैं जिसका वर्णन हां चुका है। दो चार नोट और आवश्यक हैं जो अंकित किये जाते हैं ॥

सधि वर्णन करने की हम यहाँ आवश्यकता नहीं समझते,

संकेत मात्र लिखते हैं, यह मैथुन से भी जो निर्वलता होती है वह भी प्राण शक्ति, रक्त, और वात के कम होने से होता है और यही तीन वस्तुयें उत्तेजना के घाते आवश्यक हैं। प्राण शक्ति सूक्ष्म है, आनन्द प्रदान करती है, रधिर के कारण फठारता इस में आती है, और वात से फेजावट होती है ॥

प्राण शक्ति तीन प्रकार की—दार्दिक, मस्तिष्कीय, और यकृतिय ॥

दार्दिक शक्ति से मैथुन में आनन्द आता है ॥

मस्तिष्क की शक्ति से स्त्री पुरुष के जननेन्द्रियों के मिलने व छिदने से आनन्द होता है ॥

यकृत शक्ति मैथुन की ओर प्रवृत्त करती है ॥

इन २ की निर्वलताओं से उनकी जीवन शक्ति में निर्यलता आजाती है। और रधिर की कमी से जो क्लेश्यता होती है उस में कठोरता नहीं आती है। और यह अधिकतर यकृत की निर्वलता के कारण से होता है ॥

वात तृय की क्लेश्यता में फेजाव भली भांति नहीं होता उस समय वातक औषधियां व पदार्थ दिए जाते हैं परन्तु इस प्रकारका रोग हमने कम देखा है। चौर्य के अधिक निश्चलने और उसके खराब हो जाने से प्रायः क्लेश्यता होती है। यही तो शरीर का सूर्य है और इस के न होने से शरीर के समस्त अवयव भी निर्वल हो जाते हैं और तब प्रण रक्त वात भी हाता बिना इस के बढ़ कर ही क्या सकता है, इन वातों बहुत काले प्यास रजना चाधिप कि धीर्य जय कम हो, पतल हो, या दुषित हो तो पहले उस की ओर ध्यान दिया जाव ॥

इस क्रिया से यदि नसें व पहे ऐसे सुस्त हो गए ह, कि उन पर रोग्य भी गति का कुछ प्रभाव नहीं आता है तो भी उत्तेजना

असम्भव है, उस समय उपर्युक्त कारणों का खोज करके उस औषधि के साथ २ कोई तिबा व लेपादि की मालिश से उन नसों व पट्टों को हड़ करना चाहिये ताकि वह प्रभाव उचित जगह पहुंचा कर पूरी शक्ति का हेतु बन सके ॥

सब से बुरी प्रकार की नपुंसकता

वह है जो कि मन से उत्पन्न होती है। भय शंका घृणा, संभ्राति आदि सम्पूर्ण बल नष्ट कर देते हैं। यह विचार कि मैं प्रबल नहीं हो सकूंगा मैं निर्बल हूँ, नपुंसक बनने के लिए पर्याप्त है। तुम ऊपर २ से खूब कहते हो कि मैं बलवान् हूँ, जयरदस्त हूँ परन्तु थोड़ा भ्रान्तरिक विश्वास हो जावे कि तुम कुछ नहीं कर सकते हो, फिर बोढ़े जैसा बल भी हो परन्तु तुम कुछ नहीं कर सकोगे। मन की शक्ति बड़ी प्रबल है, इसका इलाज किसी औषधि से नहीं हो सकता, इसके वास्ते और उपाय करने पड़ते हैं। कई लोगों के पत्र हमको आते हैं, कि हम घर तो सब कुछ कर लेते हैं, परन्तु बाहर कुछ नहीं हो सकता है। ऐसे मनुष्यों को तो हम यह उत्तर दिया करते हैं, कि अच्छा है तुम एक पाप से बचते हो, परन्तु प्रायः ऐसा होता है, कि मनुष्य अपने घर से खी रह जाता है, और इसका कोई कारण सिवाय मन के संदेह के मालूम नहीं हुआ करता है। पहिली बार ही पास जाते समय भय और शंका मालूम हुई और कुछ न हुआ, इस के पीछे फिर वह भय दूर नहीं होता। अभिषेक [वैद्यों से सैंकड़ों रूपयों की औषधियां लेकर खाते हैं और लाभ हीनही होता। बाज़ी मूर्ख स्त्रियां भी अपने पति की नपुंसकता का हेतु होती हैं, एक बार किसी कारण से पुरुष रह गया वह हंस देती है, घृणा की दृष्टि से देखती है, वा मखौल कर देती है, उस से पुरुष के दिख में बर्की से [वाच है, और स्वदेव के लिए कम से कम उस स्त्री के लिए नपुंसक हो जाता है। मनको मन से ही उठाया जा । है, और कभी सिद्धांत पर सब इलाज किया जाता करता है।

पहुँचे कठोर खोल-मिच, अधिक लक्षण भी कृत्यता उत्पन्न करते हैं। सोजाक, मातृक के नीचे भी नपुंसकता ही ज्ञया करती है। लिंगेन्द्री में किसी प्रकार की खराबी, किसी नाड़ का कट जाना अण्ड कोषों का अपने काम में निर्धर हो जाना, पुंसकत्व को कम करते हैं। इस प्रकार कई बातें हैं, जिन्हें जान कर और असधी कारण को मालूम करके इलाज किया हुआ कुछ काम दे सकता है अन्य नहीं ॥

यह रोग बड़े कठिन रोग हैं, और वह लोग अधिक रोगी होते हैं, जो अज्ञानता से बिना चिकित्सक के गुण स्वभाव जाने इलाज कराते रहते हैं ॥

लिंगेन्द्रियों की चिकित्सा पद्धति ॥

कारणों का वर्णन हो चुका अब चिकित्सा विधी जाती है। लिङ्ग के रोगों से हमारा अभिप्राय वीर्य रोगों, नपुंसकता, शीघ्र पतन, शुक्रमह, धातु तारल्य, लिङ्ग की नसों, और पट्टों की शिथिलता प्रमेहादि, इन के साथ जो और रोग होते हैं, जैसाकि पहले वर्णन किया गया है, वह सब इसी के भीतर समझनी चाहिए ॥

योक का स्थान है, कि यह रोग इतने बढ़ते जाते हैं, कि दैनिक डाक को देख कर भारत वर्ष की दशा मर रोना घाता है। सूटे मत और सङ्घता के फ़ैलाने वाले कहते हैं, कि ऐसे रोगियों के इलाज को आवश्यकता नहीं है। उन्होंने अपने किए का फल भया और ऐसी औषधियों का विद्यापन देना पाप है। परन्तु साहियों! दृष्टों को बचाना, गिरे हुए को उठ ना तो हमारा कर्तव्य है ॥

डॉक्टर ट्राल (Trall) साहब लिखते हैं, कि जो लोग इस समय ऐसे कठिन रोगों से पीड़ित हैं वह कभी इन कुकर्मों के कर्ता न बनते यदि इनको पहले बतलाया जाता। वे शिथिल उनको इनके विनाशकारी

फलों से अलग करते हैं, और न माता पिता उन बातों को बताना कर्तव्य समझते हैं। दुराचारी मित्रों की संगत उनको खराब कर देती है। हजारों पत्र हमारे पास आते हैं जिसमें सब कुछ खोजेंगे और लिखते हैं कि यदि इसकी इतनी हानियों से वह यथावत अलग होते तो कभी अपने पात्र पर आप कुलडाही न मारते, मरतु, जो गिर चुके हैं उनको हम न उठावें, यह सभ्यता और मनुष्यत्व से दूर है ॥

इस पुस्तक को सहस्रों की संख्या में बांटा जा चुका है, और अगणित पत्र आते हैं कि काश इस रिसाले को हमने पहिले पढा होता ॥

यदि कोई अपनी इच्छा के अनुसार स्वयम् औपधि सोच ले तो वह मंगवा सके हैं, जो स्वयम् नहीं योजना कर सके उनको सविस्तर हाल उस फारम पर जो इस पुस्तक के पीछे लगी है लिखना चाहिये ॥

—०—

दूसरा भाग ।

अब हम उन मनुष्यों के वास्ते किञ्चित आवश्यक सूचनायें लिखते हैं जो दुर्भाग्य से हस्तमैथुन अथवा बहुमैथुन करने के कारण विविध रोगों में ग्रस्त हैं। हस्तक्रिया, छड़कों से व्यभिचार, और बहुमैथुन ने तो नाश ही कर दिया था, इस पर झूठे, लुटेरे, चिह्न पत्र बाजों ने रही लही कसर निकाल दी, प्रत्येक इस तवाही का लाभ उठाता है, और रोग के दूर करने का लक्षा भूझा दावा करता है। और रोगी भी यदि साधारण पेट दर्द हो, तो अच्छे से अच्छे वैद्य के पास ज्ये हैं, परन्तु खान-

पुष्टि की औषधियां जिसका विज्ञापन (इशतिहार) देखते हैं उसी से मंगवा लेते हैं। उन में से कोई सात दिन में ही सदैव को पुष्टि देने की प्रतिज्ञा करता है, कोई १५ दिन के भीतर वखवान पुरुष बनाता है, कोई चालीस दिन के भीतर पहलवान बनाता है। विज्ञापन को पढ़ते ही रोगी फड़क जाता है, किसी को सन्यासी दवा बता गया है, किन्हीं के दाप दादा की प्रभावशाली औषधि है। शब्द ऐसे खण्डेदार लिखते हैं, कि जो उसे पढ़े एक बार तो अवश्य ही दवाई मंगवाय। क्योंकि एक ही रूपया की औषधि से आयु भर की शक्ति का ठेका करते हैं। यदि इनमें से एक भी सच्चा होता तो रोगी क्यों भटकते फिरते? वास्तविक बात यह है, कि ऐसी औषधियों से पौड़े दिन किञ्चित् पुष्टि झलत होकर पश्चात् पहले से भी बुरी अवस्था होजाती है। हजारों और लाखों ऐसे रोगी हैं, जो एकको छोड़ दूसरी और दूसरी को छोड़ तीसरी आर इत्यादि प्रकार की औषधियां मंगवाते रहते हैं। परन्तु “वदता नया रोग यह दादण ज्यों २ औषधि कीना” हम यह नहीं कहते कि सबके सब झूठे हैं परन्तु बहुत बड़ी संख्या इन लुटेरे विज्ञापन दाजों की है। एक ही औषधि को लेकर वह सब का उसी से इबाज करना चाहते हैं, और हम तजरुबे से कहते हैं कि कई रोगियों पर हम ने इस २ औषधियों को बदला, तब कहीं जाकर आराम हुआ। वीर्य सन्वन्धी रोगों का दूर करना कोई बालकों का खेल नहीं है। औषधि सेवन काब में लाभ और पश्चात् रही होजाने का यह कारण है, कि उनमें अफीम, अंग, संखिया आदिक ऐसी निकृष्ट होती हैं, कि पहिले पहल तो उनका उद्वेजनकारी प्रभाव होता है परन्तु पीछे से सम्पूर्ण पट्टे (स्नायु) दुर्बल होजाते हैं ॥

साहबो ! यदि आपको भेर दायन पर विश्वास नहीं है तो किसी अपने मित्र से जो ऐसी औषधियां मंगवा चुका हो, दरियाफत करलें। यद्यपि बड़े दावे शंभन वालोंमें से प्रत्येक की औषधि मंगवाई परन्तु रोगी की अवस्था में वीर्य से उन्नीस का फर्क न हुआ। इस प्रकार

का इबाज कराने से पहिले यदि "रिसाला हकीम व मरीज़ लर्दू" जो २॥ को कार्यालय अमृतधारा से मिलता है पढ़ लिया जाय तो बहुत उचित होगा। इसमें वैद्य वा रोगी के कर्तव्यों का वर्णन है। हिन्दी में अनुवाद हो रहा है ॥

हां! बहुत दफा रोगी का भी अपराध होता है। यह स्मरण रखना चाहिये कि घातु सम्बन्धी सम्पूर्ण रोगों को बहुत धीरे-२ आराम आता है और जो लोग आज इसकी कब उसकी औषधि सेवन करते रहते हैं, और इदता के साथ एक का नहीं करते वह अकृत कार्य्य रहा करते हैं। जिस योग्य वैद्य का तुमने इबाज आरम्भ किया है, और आराम लगा है, तो उसकी आज्ञानुसार चिकित्सा करते जाओ। आप सोचें तो सही, कि जिस मकान को गिराते हुए इतनी देर लगी है, कि कई सालों के पीछे क्रमशः इस दर्जे तक पहुंचा है, उसको फिर बनाने के वास्ते कितनी देर की आवश्यकता है। सोचो तो सही कि पांच साल की खराबियों से क्रमशः गई शक्ति को वापिस आने के वास्ते आप केवल सत्ताह दो सप्ताह की औषधि देंतें हैं। हमने अपनी औषधियोंका नमूना इसी वास्ते रफला हुआ है कि यदि आपको विज्ञापित वैद्यों ने अविश्वासित (बदजन) कर दिया है, तो यांड़ी सी औषधि मंगवा कर देखवो, यदि किंचित भी हो तो फिर इसको यथेष्ट समय तक सेवन करो। जो लोग हमसे परिचित हैं, और औषधि निश्चित कराते हैं, चाहे एक ही सप्ताह में आजावे या छः मास में, वह सिवाय हमारे और किसी के पास न लावेंगे। क्योंकि उनको विश्वास ही चुका है कि हमारे यहाँ से अच्छी दवाई और कहीं नहीं मिलेगी। परमात्मा की कृपा है कि जो लोग हम से विधि पूर्वक इलाज कराते हैं वह प्रति सैकड़ा २० आरोग्यता लाभ करते हैं। आगे ईश्वर के आधीन है, हम कोई दावा नहीं करते हैं। हम केवल यह कहते हैं, कि हम अच्छी से अच्छी औषधि देंगे, कि जो और जगह से नहीं मिलेगी, क्योंकि केवल इस

रोग को सौ से अधिक औषधियाँ हर समय हमारे बर्तन तैयार रहती हैं ॥

हां मैं यह बर्णन कर रहा था, कि वीर्य सम्बन्धी रोगों को देर में आराम आया करता है। इसमें यह बात स्मरण रखें, कि शुक्रमेह अर्थात् घातुका मूत्र के साथ गिरना शीघ्र घट होसका है। स्वप्न दोष आधिक्य को हटसे अधिक देर लगती है। जो लोग खिन्ना करते हैं कि हम चाहते हैं कि स्वप्न दोष पूर्णतः बन्द हो जावे, यह गवती करते हैं, जब उन के वास्ते पैला होना कठिन है। यह नहीं जब एक बार बहने लग पड़ी तो फिर पूर्णतः बन्द कभी न होगी। इसलिये हमारा अनुभव है कि महीने में एक दो बार प्रायः जवानों को औषधि करने पर भी होता रहता है। सप्ताह में एक बार या अधिक (बाजों को रात में दो तीन बार होने लग जाता है) स्वप्न में वीर्य का निकल जाना बहुत बुरा है, और इसका अवश्य इलाज करना चाहिये। स्वप्न दोष यह बहुत हानिकारक होता है, जोकि बिना विषय सम्बन्धी स्वप्न के हो, बिना ज्ञान होने के वीर्य निकल जाया करे और प्रमान को ही पना लगे। इसके सम्बन्ध में इतना और स्मरण रखना चाहिये कि बाज समय पुष्टि कारक दवा खाने पर स्वप्न दोष पहिले से अधिक हो जाया करता है। और इसका कारण यह होता है कि शरीर इस योग्य नहीं होता कि उस पुष्टि और वीर्य को सहार लके जो उस औषधि से उत्पन्न होता है। यदि औषधि घातु गाढ़ी करने वाली है तो घीरे २ स्वप्न दोष मिट जावेगा। शीघ्र पतन देर तक उठरने वाला रोग है और इसका इलाज महा कठिन है। कभी २ पैला भी देखा गया है कि स्वप्न दोष, घातु खींचता, घातु जाना सब दूर होगए, परन्तु शीघ्र पतन कभी विराजमान है ॥

जब कि प्रवेश करते ही वीर्य निकल जाता है, या उत्तेजना होते ही धातु निकलनी आरम्भ होती है, या प्यार करते ही वीर्य स्खलित होजाता है, और लज्जा उठानी पड़ती है तो यह दशा अत्यन्त बुरी होती है। और चिरकाल तक इसके इलाज की आवश्यकता होती है। परन्तु जिसके तनिक भी स्तम्भन है यदि वह हमारी "शीघ्र पतन दूर विना औषधि" को मंगवा कर उसके नियमों पर

करें तो अपने स्त्री को प्रसन्न रख सकता है यदि वह अमल भी करे जो इसमें वर्णन है तो स्तम्भन की शक्ति भी बहुत बढ़ सकती है (जितनी चाहे) शीघ्र पतन रोग को बहुत ही धीरे २ आराम प्राया करता है। स्तम्भनकारी औषधियां स्नाकर एक दिन का गुजारा हो सकता है, और महीने पन्द्रहवें किसी अच्छी दवाई से यदि आवश्यकता पड़े यह काम मजबूरन ले लें। परन्तु स्तम्भन की औषधियों के अधिक सेवन से शीघ्र पतन प्रागे से भी अधिक बढ़ जाता है और अन्य बहुत से रोगों के उत्पन्न होने का भय रहता है। स्तम्भनकारी औषधि केवल वही खानी चाहिये जो रोगी को नष्ट करने वाली हो अस्तु यही उचित है कि असली रोगों का इलाज करें, और उसके वास्ते तन मन धन व यत्न करें। सब भर भी औषधि खानी पड़े तो भी अवश्य खावे। अन्यथा स्मरण रहे कि यदि इधर उधर भटकते फिरेंगे, तो आराम नहीं आवेगा। कुछ लोग जितनी उनमें स्तम्भन शक्ति होती है उससे अधिक इच्छा करते हैं, वस्तुतः यह शक्ति प्रत्येक मनुष्य में भिन्न २ होती है और जो किसी को स्वाभाविक हो उससे बढ़ना कठिन है जो पीछे कम हुई है वह औषधि से दूर होने योग्य है। १ मिनट से १० मिनट तक स्वाभाविक भिन्न २ प्रकृति वालों को मालूम हो सकती है। शीघ्र पतन के वास्ते एक साधन भी है ॥

काम उत्तेजना यदि अन्य कारणों से होतो पुष्टि कर औषधि खाने से शीघ्र आराम आना है। यदि इच्छा प्रकृति मजबूत हो

तो रश्मि के वास्ते पुष्टि कर औषधि की भी आवश्यकता पड़ती है, और साथ ही लिंगलेप वा मालिश भी कराई जाती है और धीरे-धीरे स्नान कराया जाता है ॥

अचेतनता अथवा क्लेशता को विशेष रूप से दूर करने वाली और पुष्टि कर बहुत सी औषधियाँ हैं, और यदि प्रमेह, शीघ्रपतन स्वप्नदोष, इत्यादि और रोग न हों तो दो-तीन सप्ताह औषधि खाने से ही बहुत बल उत्पन्न हो जाता है। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए जब बाजीकरण के वास्ते औषधि सेवन करें, तो जो शक्ति औषधि से उत्पन्न हो वह ज्यों-उत्पन्न हो, गंवाते न जावें। यह पुस्तक लिखी जा रही थी कि एक रोगी मेरे पास आया और प्रकट किया कि जो पाँच पुड़िया औषधि आपने दी थी उससे पाँच ही दिन पुष्टि रही, उसके पश्चात् फिर मैंने आज तक स्त्री प्रसंग नहीं किया। मैंने उससे प्रश्न किया कि पाँच दिन में क्या आप सम्भोग कर सकते थे ? उसने उत्तर दिया कि हाँ इन पाँच दिनों में तो प्रति दिन करता रहा हूँ। और इन दिनों घृत भी पचाता रहा हूँ और पुष्टि भी खूब रही है। स्फूर्ति और तस्व्याई भी मालूम होती रही है। मैंने उसको समझाया कि यदि वह ५ दिन सन्तोष तो यही पाँच पुड़िया दो-चार सप्ताह तक उसकी शक्ति को स्थिर रखती।

अतः इन रोगों की औषधियाँ

खाने के समय जिनका मैथुन करने से दूर रहा जाय हो उत्तम है। जब तक औषधि सेवन करें तब तक बसे रहें, अन्यथा ४० दिन तो अवश्य परहेज करके एक औषधि सेवन करें। जिनको चिरकाल तक औषधि खानी पड़े वह मालिक इस क्रिया को कर सकते हैं। जो बहुत कामो हैं वह पन्द्रहवें दिन करें यद्यपि उन्हें औषधि अधिक देर तक खानी पड़ेगी। जो किंचित भी रोक न सके हैं

वह भाड़े के ट्यूबने रहेंगे जब तक औषधि खाते रहें आराम रहेगा किन्तु कतिपय समय औषधियाँ भी खास न करेंगी ॥

हमारी औषधियों से इलाज कराने वाले निम्न लिखित बातों का ध्यान रखें ।

(१) यदि कोई ऐसी औषधि देखें जिसका प्रभाव ठीक आपकी अवस्था के अनुसार पड़ता है तो निखनवह भंगवाएँ ॥

(२) यदि केशल साधारण जराबी है, और किसी विशेष बात के वास्ते एक औषधि की आवश्यकता है, तो पत्र में हाल लिख कर औषधि भंगवाएँ, (पत्र पढ़ने की फीस १ रुपये ली जाती है जोकि पत्र के साथ भानी चाहिये) इस दवा में औषधि भेज कर उस पत्र को वाञ्छित दफ्तर किया जाता है ।

(३) जिनका कम्पा इलाज है, और वह उस फार्म को जो इस पुस्तक के अन्त में लगा हुआ है, उसको निकाल कर खाना पुरी करके भेजें, उनका नियमानुसार इलाज आरम्भ होगा, और एक फार्म ली जायेगी, जिसमें उनके सर्व पत्र रखे जावेंगे, ऐसे मनुष्यों को मन लगा कर इलाज करवाना चाहिये, यह रोग कठिन है । एक औषधि से आराम मालूम न हो, तो इलाज छोड़ नई देना चाहिये, फार्म बनाने की फीस १) है, ऐसी दवा में २) मनी आर्डर करके भेजना चाहिये ॥

(४) बाजे अनुप्य औषधियों के विषय में धूसी-आधारें रख कर लेते हैं, वह समझते हैं कि एक उधिया समुक्त वस्तु की प्राविगी और हम राजी हो जायेंगे, उनको मामूली आराम हो तो वह कहते हैं कि औषधि जराब है, उन लोगों से प्रार्थना है, कि वह हमारे इलाज को आरम्भ न करें, हमारे लाखों रुपये के कारखाने को जिन्होंने बना है, और औषधियों की बर्तौ है वह जानते हैं कि उख से उख

औषधि तैयार करने का हम उद्योग करते हैं और लैकड़ों औषधियाँ तैयार रहती हैं परन्तु आराम समय पर ही होता है, इतनी दूर बैठे हुए कभी परीक्षा की भी भ्रष्ट हो सकती है, या बाज समय हम उचित नहीं समझते कि जोश करने वाली कोई औषधि ही जावे, ऐसी दशाओं में थोड़े दिनों के पछि ही औषधि को बुरा करने लग जाना अच्छा नहीं, बड़े से बड़े दुनिया के किसी चिकित्सक को बीजिए, साधारण रोगों के वास्ते बाज समय रोज तुलसे बदलने पड़ने है, फिर ऐसे कठिन रोगों में लोग क्यों इच्छा करते हैं कि पहिली ही औषधि से थोड़े ही दिनों में उनकी इच्छा के अनुसार आराम हो जावे, ऐसे लोग उनका इलाज करवाते रहते हैं जो उनको बड़ी २ आशाएं दिखावे, और हमेशा अकृतकार्य रहते हैं॥

(५) इलाज विश्वास से आरम्भ करो, अविश्वास से आराम नहीं होता है ॥

(६) औषधादि भेजने में बड़ी सावधानी रखनी जाती है, परन्तु फिर भी मज्जुय से गलती होना संभव है। लुकादि से गलती हो सकती है, ऐसी दशा में तत्काय ही हमको सूचित करना चाहिये, गलती ठीक कर दी जायगी। यदि किसी कारणवश औषधि खाने से कोई कष्ट मालूम होता उसे तत्काय ही बंद करके हमें सूचना देनी चाहिये ताकि उसके कारण को मालूम किया जाय ॥



भस्मों का सेवन ॥

यद्यपि एक अत्यन्त बुरा और निर्मूल विचार है कि भस्म ४० वर्ष की आयु के पहिले न खाना चाहिए ॥

भस्म तथा रस द्वारा चिकित्सा एक अत्यन्त लाभदायक विधि है। भस्म और रस ही है मानों मृत को जीवित कर सके है। मासों के रोग दिवसों में और दिवसों के रोग मासों में दूर, की

सामर्थ्य इन्हीं में है। एकरश्मरम व रस ही बीसों रोगों को दूर करसक्ता है। सन्यासियों का तीला प्रसिद्ध है, जो वर्षों के रोगों को एक दिनमें गंवा दिया करते हैं, वह इन्हीं भस्मों अथवा रसादिक से बनता है। भस्म एक दिन के बालक से लेकर सौ वर्ष के बूढ़े तक को उचित मात्रा में दी जासक्ती है। रसों और भस्मों का एक चादल जो कुछ कर सका है, यह दूसरी औषधियों का एक कटोरा भी नहीं कर सका। वेद्यक पत्र बेशोपकारक जिन को पढ़ने का अवसर मिलता है वह भस्मों और रसों के छा माँ से भलीभान्त अवगत हैं, यहां विस्तार पूर्वक नहीं लिखा जा सका ॥

जोग कहते हैं कि भस्म हानि बहुत करती है, परन्तु मैं कहता हूँ कि भस्मों, रसों, और प्रत्येक वस्तु को यदि उचित अवसर पर न दिया जावे तो हानि करती है। सोंठ भी यदि अनुचित विधि से दी जावे हानि करेगी और इसी प्रकार भस्म संखिया भी। परन्तु सोंठ का लाभ भी साधारण है और इस वास्ते अनुचित विधि से ही हुई हानि भी वैसी ही करती है, प्रत्युत भस्म संखिया जैसा कि गुण में अनृत तुल्य है अनुचित विधि से देने से उसका कुफल भी बहुत अधिक प्रगट होगा। अस्तु रमरखा रक्खो कि यदि भस्म प्रकृति को सोच विचार कर उचित विधि से दिया जाता है, तो कभी हानि न होगी प्रत्युत अनृतवत प्रमाणित होगी। भस्म और रसों में यह बड़ी विशेषता है, कि अनुपान के परिवर्तन से प्रत्येक प्रकृति के अनुकूल होजाते हैं। यथा एक रस पुष्टि के लिए हमने एक व्यक्ति को दिया और कहा कि पान से खाया करो, उसने खाया उसको बहुत गरमी हुई अब यदि वह उसकी मात्रा कम कर देवे या पान के स्थान में मक्खन या मलाई में खावे वही भस्म उसको लाभदायक होगी। भस्मों और रसों में लिखा होता है कि अमुक रोगमें लाभदायक है, तो वह उसके सम्पूर्णा प्रकारों में प्रायः दितकर होता है। यदि उचित रूप से स्वभाव के अनुसार अनुपान नियन कर

दिया जावे। भस्मों और रसों के द्वारा चिकित्सा एक महान् और भेद्य चिकित्सा है

एक बात और है कि जो भस्मों उन्नित रूप से तैय्यार न की गई हों, वह वास्तविक हानि कारक होती हैं। यद्यपि रोग को दूर कर देती है, परन्तु अन्य हानियां करती हैं। जैसा कि अशुद्ध पारा की भस्म प्रायः नपुसकता और कुष्ठ को उत्पन्न करती है, यदि कोई ऐसी भस्म देता है तो उसका दोष है न कि भस्म का। प्रायः बेजा गया है कि अशुद्ध धातुओं की बनी हुई भस्मों बहुधा रोगों को उत्पन्न करती हैं, जिसको कि यह शुद्ध होकर दूर कर सकती हैं। इसका इजाज यह ही सक्ता है कि योग्य वैद्य से तैय्यार कराया जावे और ऐसे वैद्य से न लिया जावे। मुझे एक बार एक महाशय ने लिखा, कि अमुक १ दुकानों से भस्म कब्ज है ॥ तोला मिलता है आप-१०) तोला क्यों बेचते हैं ? मैंने उत्तर दिया कि ऐसी भस्म १०) तोला पर भेज सक्ता हूँ परन्तु जो भस्म डेढ़ सौ पुट देकर महीने भर के परिश्रम से तैय्यार करू तो १०) २०) तोला से कम नहीं दे सक्ता। स्मरण रखो कि सस्ते की ओर ध्यान न देना चाहिए, किन्तु उत्तम औषधि की ओर, और हम आप लोगों को निश्चय दिलाते हैं, कि हमारी प्रत्येक भस्म अथवा रस अत्यन्त सफाई और चौकसी से तैय्यार किये जाते हैं। यदि खराब हो जावे तो तुरन्त फेंक दिया जाता है ॥

भस्मों के सेवन के विषय में दो चार शब्द लिखने की इस विषय आवश्यकता हुई कि कमी २ कोई पत्र आ ही जाता-है, कि मेरे मित्र मुझ को भस्म के-सेवन करने से रोकते हैं। यह उनकी भूल है, क्योंकि यदि उन्हें भस्म हितकर है, तो निसन्देह उनको सेवन करना चाहिये ॥

औषधियों के सेवन करने की विधि

(१) औषधि को जो कम से कम खुराक जितनी हो उससे आरम्भ करनी चाहिए। यथा सिखा हां कि मात्रा अर्ध गोली से दो गोली तक, मात्रा हो चावण से एक रत्ती तक, तो इसका अभिप्राय यही होता है, कि पहिले दिन सब से थोड़ी मात्रा अर्ध वटिका, अथवा २ चावल, अथवा जो कुछ लिखा हो खावे। यदि मात्रा एक वटिका वैनिक है तो छोटी वटिका टूट कर खानी चाहिये। उस दिन यदि तथीयत पर कोई विशेष प्रभाव न हो, प्रत्युत ऐसा प्रतीत हो कि जैसे कोई औषधि चार्ही ही नहीं, तो अगले दिन मात्रा अधिक कर दें और इस प्रकार बढ़ाते जावें। यदि पहले ही दिवस गरमी अथवा कोई अन्य ऐसी ही बात प्रगट हो, तो दूध मलाई अधिक सेवन करें। तथा दूसरे दिन मात्रा किञ्चित् कम कर दें। सम्पूर्ण औषधियों के सेवन में इसी नियम को स्मरणा रखना चाहिये, और यह भी स्मरणा रहे कि पित्त प्रकृति वाले पौष्टिक औषधियों को अल्प मात्रा में सेवन कर सकते हैं। और कफ प्रकृति वाले अधिक, जो लोग पचा सकें वह स्थाय्य प्रातः दो बार खवाई कर सकते हैं। कुछ हानि नहीं है ॥

(२) औषधि सेवन के दिनों में मैथुन संभवे रहना चाहिये। अथवा उन निषेधों के अनुसार करना चाहिए जो प्रथम भाग में इसके विषय में अंकित है। यदि दीर्घ्य को गाढ़ा करने वाली औषधि खाते हैं, तो ऐसे विद्यारों से भी बचे रहना चाहिये, परन्तु जब वाजकिरण के वास्ते खाते हों उचित मात्रा में रुग्णों बुरा नहीं है ॥

(३) यदि कोई औषधि गुण करती हुई अनुभव न हो तो पत्र द्वारा पूछ सकते हैं, और जो लाभ कर रही हो, तो उसका वहेष पूरा होने पर्यन्त जाना चाहिये ॥

(४) जो खोग कहा करते हैं, कि ऐसी औषधि दें कि सारी आयु भर औषधि की आवश्यकता न रहे, उन की सेवा में मेरा यह उत्तर है कि जब तुम उत्पन्न हुए थे और फिर जवानी प्राप्त की थी उस समय भी तो तुम को यह बीमारी न थी । यदि तुम ने अपनी अनुचित क्रियाओं से इसको सहेड़ लिया है, तो क्यों न फिर वैसी ही से यह बीमारी तुम्हें आ घेरेगी । यदि तुम स्वास्थ्य सम्बन्धी निषण्णों का पालन करोगे, और प्रथम भाग के नियमों का पूरा ध्यान रखोगे, तो निश्चय जानों कि फिर कभी यह रोग न होगा ॥

(५) दूध, घृत, मलाई मक्खन आदि पदार्थ ऐसी औषधि के सेवन करने वाले की अधिक खाने चाहिये, परन्तु इतना कि जो पच सके । क्रमशः इन के पचने की शक्ति बढ़ती जाती है । दूध में उबला हुआ और गरमियों में धारणियाँ उत्तम हैं, जो कि उसी समय का दुहा हुआ हो । मलाई, मक्खन, शीतल स्निग्ध हैं, घी उष्णस्निग्ध है । यदि औषधि सेवन काल में कुछ रुद्धता अथवा दाह आदि प्रतीत हो तो मक्खन अथवा घी, अथवा दूध के खाने अथवा अर्क गावमुवान और घेदमुशक आदि पाने से दूर होजाता है । दूध गरम करके उसमें घी और मिश्री मिलाकर पीना बहुत ही पुष्टि होता है, और धारण्य को बढ़ाता है । मध्याह्न के उपरांत तीसरे पहर इस को भी पी लिया करे तो उत्तम है ॥

(६) पुष्टिकर औषधि सेवन करने से पहिले जुजाव ले लिया जाय तो उत्तम है, जिनके कोष्ठवृद्धता रहती हो उनको तो अक्षय लेना चाहिये ॥

(७) औषधियां प्रायः दूध के साथ खानी लिखी हैं । दूध गाय का उत्तम है । जो वह न मिले तो भैस वा बकरा का, यदि दूध न मिले तो घी से अथवा मक्खन से अथवा मलाई से दवाई खावे । यह न मिले तो मधु से अथवा नधु से घृत से खा सकते हैं । परन्तु

स्मरण रहे कि मधु वृष सं दुना हो । दूध जिन को अनुकूल न आवे वह काकी मूसखी का मर्क निकलवाले तो बहुत उत्तम है । मूसखी १ सेर में छः सेर पानी मिला कर मर्क खिंचवा दें ॥

वीर्य सम्बन्धी रोगों में निम्न लिखित वर्जित है:-

मैथुन, लैब के पदार्थ, बहुत उष्ण (गर्म) पदार्थ, मख मूत्र आदि के बेग को रोकना, विष्टर्भी पदार्थ, छात्र दही, और सम्पूर्ण प्रकार के सड़े पदार्थ (यथावश्यक किंचिद् अनार दाना या शमली की सटाई खा सकते हैं ।) दिन में सोना नमक का अधिक व्यवहार ।

नि लिखित पदार्थ बल बढ़ाने वाले हैं:-

कुछे २ स्वादिष्ट भोजन, राग, बाजा, अपनी प्रिय स्त्री को सुगन्धि लगा कर पास घैडाना, पुष्पों की माला, धाटिकाधों (वगीचों) की खैर, चन्द्रमा की चांदनी, घी, दूध, मिथी मिलाकर पीना, गेहूं, बज्र, शाठी च बल, दाख, शतावरी, कौचथीच, शोलक, टालमखान, अश्वगन्ध, गजए, सिर्गंडा मेवा, सेमल का फूल खजूर, नारियल वादाम, तिल मूसखी, मुकेटी, हकरकरा, जादफल, जावित्री, बंश लोचन सालिन, आमला, खंशखाश, मस्तगी, मोचरह, पीपल, सोंठ नागरमोथा, इत्यादि बल वीर्य को बढ़ाने वाले हैं ॥

कुछेक वस्तु जो वीर्य सम्बन्धी रोगों के लिए लाभदायक हैं व अन्य औषधियों के सेवन के साथ अथवा वैसे ही इनको सेवन करना बड़ा गुणकारी है । यदि विशेष औषधियों के सेवन के साथ इनमें से कोई भी

वस्तु सेवन की जाय तो बहुत ही शीघ्र लाभ होता है ।

(१) चावलों को और माशु की धुली हुई दाल को २ ची में नून रखने । इनमें से दो दो तोला लेकर दूध में डाल कर खीर की भांति बना कर सपें तो धीर्य गाढा करता है । मस्तिष्क को बल देता है पौष्टिक तथा प्रमेह नाशक है ॥

(२) ईलबगोल को तोले लेकर दूध में डाल कर खीर बना कर जाना पित्तज प्रकृति वालों के लिये विशेष गुणकारी है । प्रमेह को दूर करता है और पित्तज शिःशृज को दितकर है । शीघ्र पतन को भी लाभदायक है । घर में तय्यार करते समय यदि दूध में इजाबची, दारचीनी एक २ माशा और केसर एक आधी रखी मिता लिया जाय तो अधिक पौष्टिक हो जाता है ॥

(३) घाजीकरण औषधियों के साथ जो दूध पिना जाता है यदि उस दूध में औटाते समय सालिब मिसरी ६ माशा पीस कर डाल ही लावे और भली भांति पक जाने पर मिसरी मिला कर उस दूध को पिना जावे तो बहुत ही अच्छा है ॥

(४) जो लोग सन्तानोत्पत्ति के लिये औषधि सेवन कर रहे हैं वह निम्न लिखित औषधियों को प्रयोग में लाते रहें । दूध को औटाते समय उस में ३ माशे से ६ माशे तक यथा स्वभाव इकम बीड (हुहरे का गून्ड) मलमज के कपडे में बांध कर जटका हें । जब देखे कि सात गून्ड दूध में मित्र गया तो उस दूध में मिसरी मिला कर पी लिया करें । गोन्ड की मल इत्यादिक सब कपडे में ही रह जावगी ॥

(५) मलाईके लड्डू--मलाई बटिका आध खेर, घृत पाव खेर और मिथी एक खेर मिला कर मध्यम अग्नि पर पकावें

जब गाढ़ा हान पर आन तो छोटी व बड़ी इलायची जावित्री, लवङ्ग, केसर सब एक तोला मिलादे और पांच २ तोला के लहू बना लेवें भूख लगे तो एक खाजिया करें ॥

(६) पौष्टिक जामन—कौञ्च बीज की गिरी को धारीक पीस कर पानी में गून्ध लें और समतोल खोया मिला कर गुलाब जामन की भांति घृत में तल कर मिसरी की चाशनी में डाल देवें । पांच सात गुलाब जामन नित्य प्रति खाया करे । ही पौष्टिक और शीघ्र पतन तथा प्रमेह नाशक हैं । यदि जलेबी बनानी हो तो कौञ्च बीज के बराबर गेहूँ का आटा (समीर डाला हुआ जैसा कि जलेबी के लिये होता है) मिला कर जलेबियाँ तल कर चाशनी में डाल देवे । इन जलेबियों को दूध में डाल कर खाना न्त लाभदायक है ॥

(७) नारियल को धारीक कुतर कर दूध में मिला कर मद्यक अग्नि पर पकावें जब खीर की न्हाई हो जावे तो उस में घृत डाल कर पकाने दे जब अच्छी तरह पक जावे मिसरी मिला कर खावे इस खीर के खाने से दुर्बल मनुष्य मोटा हो जाता है । वीर्य पुष्ट होता है और मास्तिष्क में बल आता है ॥

(८) पूडे—फाले तिल, असगन्ध, कौञ्च बीज, धिहारी कफ को सम तोल लेकर चूर्ण बना ले और चूर्ण के समान साठी कावल पीस कर मिलावे । इस में से दो दो तौले लेकर बकरी के गाय के दूध में पतला २ गून्ध कर पूडों की तरह घी में तल ले इन पूडों को दूध की खीर के साथ खाया करे तो बल वीर्य को बढा तथा शरीर को पुष्ट करने में अद्वितीय है ॥

(९) चनों की दाल—चनों की दाल को रात्रि भर दूध भिनी रखें प्रातः सिल मट्टे पर पीठी बनावें इसके घृत में पकौड़े त

और अभी गरम ही हों कि उनको हाथों से मल कर बारीक करलें फिर भी में भूने । और फिर एक सेर मिसरी मिठावें प्रति दिन दो से पांच तोला तक खावें बड़े पौष्टिक हैं ।

अब हम उन औषधियों का वर्णन करते हैं जो साधारण रूप से इन रोगों में हम वर्तते रहते हैं । हमारे पास अनेक रोगों की बहुत सी औषधियां तबाल रहती हैं । परन्तु इन औषधियों की सम्पूर्ण सूची नहीं है, जो साधारण रूप से दितकर हैं उनका बर्णन सेवन विधि सुस्मेन न चे करते हैं । अपनी औषधियों के प्रभावशाली होने के सरोवे पर प्रायः प्रत्येक औषधि का नमूना भी देते हैं, अर्थात् प्रथम इसके कि कोई औषधि आप करीदें यदि आप उचित समझें तो इसका नमूना मंगाते, फिर हम करते हैं कि हमारी औषधियां स्वयम् प्रशंसा करावंगी ॥

रहे कि औषधियों के साथ कोई पृथक सेवन विधि पत्र नहीं भेजा जाना, प्रत्येक दवाई की सेवन विधि यहां ही लिखी है । और पथ्यादि का नियम पृष्ठ ३३, ३४ पर अंकित हैं, सब के साथ ऐमाही समझें ॥

अक्सौर नं० ?—(महत् वाजीकरण औषधि) यह दवाई बहुत सी पुष्टि कारक औषधियों का समूह है । यह उन रोगियों को सेवन करना चाहिये जिनको प्रमेह दृग्मदोष आदि की तो ऐसी बहुत शि नहीं है केवल नाताकती (कुंठता है) । और यह औषधि शानुपौष्टिक होने के अतिरिक्त घात, रुफ के रोग खांसी, नजला, जुकाम, कटिशूल, सन्धिवात, छातीदर्द, आदि रोगों को दूर करती है । शीघ्रपतन को भी दूर करती है, और दूध भी इस

से अधिक पचते और घन देने हैं। शरीर में रक्त बढ़ता है और मुख पर सुखी आती है मूल्य ६४ गोली ४) जम्बूत ८ गोली ॥) खुराक एक गोली से तीन गोली तक प्रातः भोजन खाने से प्रथम और रात को भोजन के पश्चात् ३ घण्टा का अन्तर देकर दुब के साथ खाने

अकसीर न० २, (लक्ष्मी विलास रस) — यह औषधि शुक्रमेह शीघ्रपनन, स्वप्नदोष, को शुण करती है, श्वरादि रोगों के पश्चात् जो दुर्बलता धातु क्षीणता अथवा प्रमेह आदि होजाते हैं, उसको दूर करने में रामबाण है। इसके सेवन करने से वज्र वीर्य भी बहुत बढ़ता है। जहाव हकीम हीन साहव भूतपूर्व चिकित्सक श्री महाराज जम्बू ने इसके सेवन के जो अनुभूत लिखे हैं वह नीचे अंकित करते हैं:—

सन्निपात—में एक गोली अदरक के पानी के अथवा खोंठ के काथ के साथ साहम् प्रातःकाल दें ॥

कुष्ठ के लिये—नीम के पत्ते अथवा क्वाल के काथ के साथ एक दो गोली खिलावे ॥

प्रमेह—शुक्रमेह व आम प्रमेहों पर दुध के साथ एक गोली प्रभात खिलावे ॥

भगंदर, बवासीर, नासूर—के वास्ते अर्क सौफ के साथ खिलानी चाहिये और अदवृद्धि के वास्ते हड़ के पानी से खिलावे ॥

संग्रहणी—अनिसार, रक्ताविकार के वास्ते खशख़ास से डेडो के पानी से खिलावे, अर्थात् डेडो को पानी में भिगो रखे और मल ज्ञान कर एक वा दोनो समब दें

खांसी—में हड का चूर्ण १ भाशा मिलाकर अर्क गावजुवार के साथ दें ।

रक्तार्श (खूनीबवासीर)—वे शरवत से ॥

जोड़ों की दर्द हो तो अदरक के पानी अथवा कोंठ के काथ के साथ । हफलापन के वास्ते ४ रशी बख का चूर्ण मिला कर गरम पानी से खिलावें ॥

गले के दर्द—में मिश्री के साथ देवें । उदर शूल में गरम पानी के साथ मि चाहिये ॥

कर्णशूल(दर्द कान)—में मको (काच माच) के काथ के साथ भिजावें ॥ आंख पीड़ा करती ही तो घृत के साथ ॥

नासिका की दुर्गन्धि के लिये खमीरा इनफला के साबदेवें आंख की दुर्बलता के लिये—घृत के साथ । समस्त आन्तरिक पीडाओं को रोगन वादाम एक तोला के साथ । सिर दर्द के वास्ते श्वेत अतार के साथ । प्रदर में बकी के दुग्ध के साथ खिजकारी है ॥

शह लक्ष्मी विद्याल रस नारद ऋषि जी ने श्रीकृष्ण जी को बताया था । दूध के साथ सदैव खावे तो दूदा भी हो जावे ।

बाजीकरण के वास्ते भी दूध के साथ सदैव जावें तो कामदेव के होजावे । दृष्टि की निर्बलता, मस्तिष्क की निर्बलता आदि दूर हों । मात्रा १ गोली से ३ गोली तक । इसमें अंधिद पथ्य की नहीं, बिना संशय आराम करता है, (पथ्यापथ्य देखो पीछे) सूक्ष्म ६४ गोली ४) ममूना आठ गोली १)

अक्रसीर नं० ३—इस वीर्य्य दाता र्वाभाविक बन्धेज और प्रमेह र्वादि रोगोंके नाश करने में अद्वितीय है। मात्रा २ तोले से ४ तोला तक है। प्रातः खिला कर दूध पितावे। बन्धेज के लिये तीकरे पहर पांच तोला पेखे ही खिला दें। मूल्य पाव भर का २॥ अर्द्ध पाव का १॥ ॥

अक्रसीर नं० ४—यह बहुत ही र्वाण शुष्क दवाई है। केवल घात, कफ प्रकृति वालों को दी जाती है। इससे बहुत होता है, बेशाव वार २ आना तुरन्त बन्द हो जाता है मूल्य प्रति तोला २), मात्रा आधी रत्ती से ४ रत्ती तक दूध के साथ। मूल्य ६४ गोली ४, नमूना आठ गोली ॥)

अक्रसीर नं० ५ चरपाक—बह अक्रसीर शीघ्र पतन के लिये हैं। ४० दिन तक खाने से शरीर के लिये र्वाभाविक बन्धेज पूर्ण रूपसे उत्पन्न होता है। ऐसे अनुभव को उल्लिखित है कि ४० दिन तक खी गमन न करे। यदि तदुपरान्त ६० दिन और भी मैथुन से करे तो बहुत अच्छा है। इस प्रकार र्वाभाविक बन्धेज जिनका कि होना चाहिये उतना ही सदा के लिये हो जयेगा। १५ दिन के सेवन से प्रायः दुग्ना लाभ हो जाता है। जो अधिक दिन न परहेज कर सकें वह १५—१५ दिन पंच पूर्वक कई बार करके खावे मूल्य ३) पाव भर का, मात्रा एक तोला से चार तोला तक है ॥

अक्रसीर नं० ६, नूरुदीन का चूर्ण प्रमेह और शीघ्र पतन नाशक तथा पौष्टिक भी है। मुख में सुगंधि होती है, हृदय तथा आस्तिष्क में बल आता है। और २४ दिन के बाद बल बढ़ने लग जाता है, पौष्टिक योगों में भस्मों को छोड़ कर सब से बढ़कर है। मात्रा ३ माशा से ६ माशा तक प्रातः दूध के साथ है। मूल्य प्रति

तोला ३) कपया तीन दिन के लिये पर्याप्त है।

अकसीर नं० ७ भस्म संखिया दर्जाखास रीतिशक्ति बढ़ाने और सर्व प्रकार की नपुंसकता को दूर करने के लिये आवि-
धीय है। मात्रा एक चावल से चार तक है। यह पतंगे में टाककर
पानी के घूट से तीसरे पहर को निगल जावे और ऊपर से पा
चष घे जब तककी व पिटाइ लगे तो दुधया जो चाहें तो दूध
में घी मिजाकर पी जावे। पिचज प्रकृत एले पतंगे के स्थान में
मक्खन तथा मलाई में खवे। ४-) प्रति ताशा, ४) प्रति माशा,
वार रती २)

अकसीर नं० ८ (पौष्टिक कसेली)—रति शक्ति बढ़ाने में
अद्भुत प्रभाव रखती है। थोड़े दिनों के सेवन से शरीर में शक्ति
का संचार होने लगता है। कफज और वातज सर्व रोग नाश हो
जाते हैं। शुद्ध रुधिर उत्पन्न होता है। मुख मंडल लाल हो जाता है।
गरम मिजाज वालों को तथा शीघ्र मृत्यु में यह औषधि नहीं खाई
जा सकती बहुत ही बाली करण है मूल्य १६) प्रति तोला १॥ माशा
का २) मात्रा अर्द्ध रती से दो रती तक मक्खन मलाई में खावे।
दूध का सेवन भी अच्छा है। प्रात को मध्य न्होतर व दोनों समय
अथवा गरमी प्रतीत हो तो केवल तीसरे पहर (मध्य न्होतर) में

अकसीर नम्बर ९, (हर्ष शंको रस) यह दवाई शीतोष्ण
है। जिन्को शीघ्र रतन रोग हो उन को दी जाती है। दृढ दोष
शुक्रमेह को हितकर है। बूढेपन में भी वीर्य गाढा होकर बल उत्पन्न
होता है। परन्तु इसका लाम शनैः २ होता है मूल्य ६० गोली १)
मद्युना २) खूराक १ गोली से तीन गोली तक ॥

अकसीर नम्बर १०—यह बालीकरण है। जो लोग प्रति

औषधि मिलने का पता मद्युन धारा लाहौर।

घर एक मात्र भी खेवन कर खिया करें तो वन बहुत रहेगा । इसके खेवन से सर्बधा गये गुजरे मनुष्यों को भी बहुत ताकत होती है । जिनकी गति शक्ति की अधिरुता की आवश्यकता है वह इस को खावें । खुराक एक गोली से ३ गोली तक पानी में निगल लिये करें और उपर से वाशम रौमन खांड मिला कर खाखिया करें ऐसा न करें तो दूध पीवें । मूल्य ६४ गोली ४), नमूना आठ गोली १) यह औषधि मध्यान्होतर खानी चाहिये ॥

अकसीर नम्बर ११— यह अमीरोंके खेवन करने योग्य है ।

ऐसी औषधि अमीर सदा खेवन किया करते हैं । कभी छोड़ हं कभी खेवन कारली, यह दवाई शीघ्र पतन नाशक है । प्रमेह, स्वप्न दोष निवारक और बहुत पुष्टि कारक है । हृद्य, मस्तिष्क, रक्त आमाराय, मूत्राराय, का बलदायक और सब प्रकार की पुष्टि करत है । प्रधान अवयवों को पुष्टि देता है । इस लिए मृत्यु समय देने से प्राय गरमी आ जाती है । ताऊन के दिनों में इसको खाते रहने से रोग का भय नहीं होता । याकूती का काम भी देती है । जोड़ों में दर्द को हितकर है । और वह सम्पूर्ण गुण भी है जो खजूर विद्यास रस में वर्णन किए गए हैं । मात्रा एक गोली से ३ गोली तक सायं प्रातः अर्क गावजुवन या दूध के साथ खावें, मूल्य ६४ गोली १०), नमूना ८ गोली १।)

अकमीर नम्बर १२— (महलुबार्जीकरण औषधि)

यह गोळियां उनके वास्ते हैं, जो शीघ्र पतन से दुःखी रहते हैं । यदि तीखे पहर इसकी १ से ४ गोली तक प्रकृति अनुसार दूध के साथ खावें तो रतम्भन होता है । यदि १ गोली से २ गोली तक प्रतिदिन ताऊन दूध के साथ खावें तो धानु गाढ़ा, शीघ्रपतन दू होती है, वाजीकरण भी है । इस से खांसी, नज़्वा, जुकाम, दर्द

औषधि मिलने का पता अमृत धारा काहौर ।

कमर, व अन्ध रोग, कफज व घातज व वाही रोग, मधु अथवा साँठ के पानी के साथ खाने से दूर होते हैं, मूत्राक १ से ५ गोली तक । मूल्य ६० गोली ३) नमूना २० गोली १)

अकसीर नम्बर १३—(महत्वाजीकरण) यह साधारण पौष्टिक औषधियाँ का संग्रह है। इस के गुण देख कर इस के प्रयोग कर्ता की विद्वता प्रकाशित होती है। यह घातु पौष्टिक है, कटिशूल को हितकर है। खाँसी, नज्हा, गठिया अधरंग, व अन्य पीड़ाओं को दूर करती है। यह उन लोगों को दी जाती है, जिन को घातु क्षीणता के साथ ही मूत्रातिस्कार भी हो, चार मात्रा से ही मूत्रातिस्कार बंद होने लगता है, और बल शीघ्र ७ दिन के अंदर ही पहले से अधिक माहूम होता है। जो लोग पुष्टि की हवाई दर जाड़े में आया करते हैं, उनको यह बहुत हितकर है। मात्रा १ माशा से ३ माशा तक, प्रातः सायम् पताषे में ढाब कर पानी से निगल दिया करें। अथवा ऐसे ही खा लेंगे। घण्टे डेढ़ घण्टे के पीछे जब यह पच जावे तो दूध जितना पच सकें पीयें। दूध पचने की शक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती जावेगी। मूल्य आठपावर, नमूना आधी छटांक ॥)

अकसीर नम्बर १४ (अंद कुशाद् औषधि) प्रमेह शीघ्र पतन तथा वृणशोष नाशक है। मात्रा २ माशा सायं प्रातः दूध के साथ दे। मूल्य पावसर का ३) आध पावो का १॥) है ॥

अकसीर नम्बर १५—(मकरध्वज) यह औषधि मूत्र और वीर्य का राजा है। इस में चन्द्रोदय, करतूरी, शीमलेनी कर्पूर, जायफर, लौंग, समुद्रगोप काबीमिर्च, संयुक्त हैं। चन्द्रोदय नाम रख लेना सहज है, परन्तु असन्न चन्द्रोदय तैयार करना कठिन है। मकरध्वज खानेसे पहिले एक जुजाव्यें, फिर रमईने या कमसे कम

औषधि मिचने का प्रता असन्न धरा जाही।

एकमाहीने भरमभ्रक ररती प्रतिदिन दूध के साथ खावे । तत्पश्चात् ४० दिन रुजी प्रसग ले बच कर इसको खावे । मात्रा एक रती से ७ रती तक है । और दूध की का खूब सेवन करें । ताकि अधिक पाचक हो ४० दिन के पीछे असल जवानी आजाती है । वीर्य सम्बन्धी कोई भी खराबी हो, दूर होकर सन्तान उत्पत्ति के योग्य होता है । हर प्रकार की शारीरिक व मानसिक व धातु की दुर्बलता दूर होती है । बूढ़ा जवान होता है । मकरध्वज लव रोगों को दूर करता है । इसका विस्तृत वर्णन यहां छिन्न नहीं हो सकता । अचिन्त अनुगण विधि से प्रत्येक रोग पर चर्ता जा सकता है । राजे महाराजे सदैव इसे सेवन करतेथे । इ ण प्रकृति विरुद्ध इतनी रानियां रकने पर भी दुर्बल न । मरते हुए के मुख में डाल दें, एकवार तो अघश्व ईश्वर की कृपा से उठ खड़ा होगा, हम इसके द्वारा कई निःसन्तानों के घर बसा चुके हैं । मूल्य ५०, तोबा, साधारण अवस्थाओं में एक तोबा पर्याप्त होता है । अन्यथा ३ तोबा सेवन करें । बस तीन तोबा से सब उद्देश्य पूरे होंगे । जो हर वर्ष १ तोबा खा छोड़े तो बस क्या कहना है । उनकी आयु बहुत ही बढ़े ॥

अकसीर नम्बर १६—(बृहद्द्व्यंगेश्वर) इसमें सोना, चांदी मोती, कस्तूरी, बङ्ग अम्रक, भीमसेनीकपूर, आदि पदार्थ संयुक्त हैं । प्रमेह तुरन्त इस से दूर होता है । दूध के साथ प्रति दिन एक हो गोखिरियां खाये, शी , स्वप्नशेष, की अधिकता के लिए बहुत हितकर है । शरबत नीलोफर या दूध से दिया करें । जिनके अन्वर वीर्य बहुत कम हो, और दुर्बल हों, उनको कुछ दिनों के सेवन से है । जिनकी धातु क्षराव हो इससे अच्छी होजाती है उबरादि के पीछे की दुर्बलता जाती रहती है । हृदय, मस्तिष्क, यकृत को पुष्टिदायक है । जीर्ण ज्वर में भी हितकर है । मूत्रादि चकर माना तथा २० प्रकार के प्रमेह की नाशक है । मूत्र स्वच्छ हो जाता

औषधि मिलने का पता अमृत धारा काशीर ।

हे । भोज, शीत्य, बल, रंग, तेज इस से बढ़ता है । इन सब के वास्ते दूध से लिखावे । पाण्डु कामळा (यरकान) के वास्ते छाछ के साथ एक गोली रोज खावे । जर्जिया ज्वर के वास्ते जर्क गिलोय व भ्रजवायन के साथ एक गोली दिया करे । कफज रोग यथा खांसी, नज़ला, जुकाम में जर्क गावजुवान वा अवरक के पानी से देवे । अपाचन, अरुचि, आदि को सोंफ से दिया करे । आतिसार, संमहर्षी, के वास्ते खण्ड्या के ढोंडों के पानी से हितकर है । पुराने सोजाक को अर्बत अनार से हितकर है । मूत्रातिसार में पानी से हे सकते है । स्त्रियों के सोमरोग पर भांववा के पानी से देवे । यह सुजदायक धातु पौष्टिक इत्यादि है । मूल १ ३२ गोली ४ रु०, नमूना ८ गोली १),

अकसीर नं० १६ (व) इसमें चंद्रोष्य डाला जाता है मूल्य प्रति गोली १) जो कोई इसका सेवन करता है कभी निर्वल नहीं होता । यह अश्वत्थ दर्जा के मकरध्वज से भी अधिक गुणकारक है । क्योंकि सोने की भस्म भी इसमें मिलाई जाती है मात्रा एक गोली से दो गोली तक दूध के साथ देवे ॥

अकसीर नम्बर १७, (बृहदवेक्षध्वर मिश्रित)-इस में अकसीर नम्बर १६ की औषधियोंके अतिरिक्त भस्म अकिक, संगवशव फौलाद, मूंगा, मोमयार्द, जायफल आदि भी संयुक्त है। प्रभाव दोनों दोनों के एक ही है, परन्तु यह उनको दिया जाता है जिन को शीघ्र-पतन की अधिक शिकायत हो, और नम्बर १६ इन को दी जाती है जिन को शुक्रमेह की अधिक शिकायत हो, शेष गुण मिलते है । मात्रा एक गोली से ३ गोली तक दूध के साथ मूल्य ३२ गोली ४) नमूना गोली १)

अकसीर नम्बर १८ (शिंगरफ भस्म)-यह भस्म विशेष

औषधि मिलने का पता अश्वत्थ द्वारा काहौर ।

विधि से नैवार की जाती है, जिन लोगों की नसों परों की शक्ति सर्वथा न हो, अथवा बहुत कम हो, और कोई करावी न हो उनको दिया जाता है जो शौकिया बल बढ़ाना चाहे, वह भी इस को खावे। भस्म शिगरफ में परमात्माने विशेष शक्ति भर दी है। सर्वथा नामर्द को मर्द करना इस का काम है। हम ने एक २ टिन इस भस्म से कईयों को योग्य बनाया। बल वृद्धि में अठितीय है ४० दिन लगातार इस को खावे, तो सब प्रकार का बल बढे और चेहरा पर सुरभी दाजे। मात्रा एक चादल से रती तक मुनका या मक्खन से खावे। ऊपर से थोड़ा गर्म २ दूध घूट कर पीना चाहिये। सब रोग वातज व कफज गंडिया, अथरंश, लकवा दना, खांसी कटिशल, र्द छाती, अपाचन आदि को भी हितकर है। सरदी में शरीर सुन्न होगया हो तो भी दो चार चादल गर्म कर देते हैं, ऐसी सम्पूर्ण अवस्थाओं में मुनका में खिलाकर ऊपर से अइरफ का पानी वा सौंठ का कषाय पिलाना चाहिये। मूल्य फी तोला १०) नमूना १मा० १)

अकसीर नखर १८, (रंग भस्म दर्जा अन्वल)-वह

विशेष भरम कलइ डेढ सौ पुट में तो केवल शुद्ध की जाती है। इसके सम्मुख भस्म चांदी भी तुच्छ है। शुक्रगेह और २० प्रकार के प्रमेह दूर करने में रासवाण है, शीघ्रपसन, स्वप्न दोष, को भी हितकर है, इस से वीर्य बहुत गाढ़ा होता है। सोझाक और कुर्द को भी लाभदायक है। "मर्दको बद्ध और घोडेको तंग" वाली कहावत इसीपर ठीक आती है। अधिक देर सेवन करने से नपुंसक को भी पुंसक बनाता है। जिसका वीर्य पतला हो उस को पुष्टिकर औषधि यथा भरम शिगरफ आदि खाने से पहले कम से कम एक मास इसको खाना चाहिये, मात्रा एक रती से ३ रती तक दूध के साथ प्रात वा दोनो समय। मूल्य एक तोला १०) ३ माथा २॥) नमूना डेढ माथा १।)

औषध मिलने का घना अक्षुष द्वारा लाइए।

अकसीर नम्बर २०, (मन्स्य रस)-यह रसायन शिबजी महाराज ने निर्मित की थी, इससे बूढ़ा भी जवान हो जाता है, और जो हर साठ खाये वह कमी कमजोर नहीं होता। वाजीकरण कल्पद्रुम में लिखा है:-किहमेंशा इस को बरी खाने जिसके पाल बहुत ली खियां हं। इसमें यह गुण है कि यह तेज नहीं है। क्रमशः गुण करता है और देर तक प्रभाव रहता है। एनेशा खाने से कोई हानि नहीं होती, शीघ्रपतन, शुक्रमेह, स्फुटनदोष आदि का नाशक है। पाचन शक्ति को बढ़ाता है, खदिर को उन्नत करता है। पायट्टु या कामला (परफान) कान प्रजाल, जुकाम आदि को दूर करता है। पुष्टि शक्ति और हतम्भन कारी है। जब इस औषधि को मेने समा-चार पत्र में लिखा तो एम्बर्ट के एक ७० वर्ष के गृह ने जो २२ वर्षों का पिता था मुझे को लिखा कि पर योग मुझ को पहले से मालूम था यह युषाधरुवा से प्रत्येक जाडे में दो सताह इसके सेवन का अभ्यासी है जिस का फल यह है, कि अब भी सन्तान उत्पत्ति के योग्य है। मात्रा एक गोली से ४ गोली तक गरम दूध के साथ चार्ने। ऊपर से पान चार्ने की प्रणाली है। मूल्य ६४ गोली ४), नमूना टगोली ॥)

अकसीर नम्बर २१ (४)रूपे घृहस-शजा करण-वन्धेज कर्ता शीघ्रपतन तथा प्रमेह नाशक है बहु मूत्र को भी गुण करती है मात्राबद्ध रती से एक रती तक मक्खन या सलाइमं, मूल्य १५) तोला गमुना १॥ नाता २) ६ माया ७।) है ॥

अकसीर नम्बर २२ (तान्नेश्व रस)-उपरोक्त गुणों के प्रतिरिक्त यह अधिक तेज है और दूध भी पचाने में अनुल है। मात्रा ३ रती से १ रती तक मक्खन में। मूल्य तोला १५)

औषधि मिलने का पता अमृत धारा काहीर।

अकसीर नम्बर २३-दूध घी पचाने के लिये औषधियाँ प्रायः तीव्र हुमा करती है, परन्तु यह विचित्र औषधि है। यह पेसी बीज से तैयार की गई है, जिसको प्रत्येक मनुष्य दैनिक है। दूध घी पचाने की शक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है, यहां तक कि सेरों की मौबत पहुँच जाता है, ऐसे मनुष्य की शक्ति कितनी होगी प्रत्येक मनुष्य समझ सकता है ॥

मात्रा १ चावलसे ६ चावल तक एक दिन में, ४,४ चावल प्रति दिन खांड में मिलाकर हमने एक महाशय को ४० दिन खिलाया, यह आजकल २,३ सेर दूध दैनिक पचासकते हैं। पहिले शरीर में मांस का नाम न था, अब खूब मोटे ताजे हैं। छांटक भर दूध भी पहिले न पचता था, अब सेरो पीते हैं। जब दूध और घी पचे तो इससे बढ़ कर शक्ति किसमें है। पताशा व खांड में डाल कर २,३ घूंट दूध से निगल जावें। अधिक दूध तब पीवें जब उसको इच्छा प्रतीत हो। दिन में २,३ बार थोड़ा २ पिषा करें, फिर दिन प्रति दिन बढ़ाते जावें १४ दिन के पीछे ऐसा गुण जाहिर होगा कि हेरोनी होगी। इसमें गर्मी तेजी नहीं है। और गुण इतना कि जो ७० दिन खा लोबे तो बस फिर कहना ही क्या है। सर्व रोग कफज सन्निपात आदि को हितकर है। मात्रा एक चावल से ६ तक, मूल्य प्रति तोला ५) रुपये ३ माशा १।)

अकसीर नम्बर २४ (हवूय खुशकून)-मात्रा की कोई विशेष सीमा निमत नहीं की जा सकती, जिन लोगों ने स्तम्भन को दवाई अभी तक नहीं खाई उन को एक गोली भी अधिक है, भाभी खानी चाहिए, हां बगले दिन अपनी प्रकृति का अनुमान करके खुराक अधिक की जा सकती है, और जो स्तम्भनीवर्तियों के सम्पासी हैं, वह आठ २ गोलियां भी खा जाते हैं, इसी प्रकार जिनकी प्रकृति

कफज या वातज है, वह अधिक खा लेते हैं। परन्तु गरम प्रकृति वाले को एकाध गोली ही पर्याप्त होती है। साथ ही यह है, कि एक दिन

इसकी मात्रा नियत करनी चाहिए, साधारणतः ऐसी गोलियाँ घल को हानि पहुँचाती हैं, हमने इस में ऐसी औषधियाँ प्रविष्ट करने का बद्योग किया है कि जिससे बलको हानि नहीं देती। यद्वात स्मरण रखने की है कि दैनिक स्तम्भन के वाले गोलियों का सेवन न करना चाहिये, यदि मनुष्य तुरन्त हल्लित हो जावे, और औरत न हो तो सन्तान उत्पन्न नहीं हो सकती, यदि उत्पन्न हो तो नपुंसक होती है। स्त्री खुश न रहने से घर में सुख नहीं होता है, इसी प्रकार शीघ्रपतन के रोगियों को अपने रोग का इलाज कराते हुए जब तक आराम न आवे, कभी २ आवश्यकता पड़ जावे तो ऐसी गोलियों की आवश्यकता होती है, इस लिये यह गोलियाँ परोपकारार्थ बनाई गई हैं। जो आनन्द के पीछे पड़कर इसको सेवन करेगा निःसन्देह हानि उठावेगा, हम अनुचित इसकी प्रशंसा नहीं कर सकते। सारांश यह कि स्तम्भन की गोलियाँ सदैव सेवन करना हानि कारक है। खाने की विधि यह है, कि १ या २ गोली प्रकृत्यानुसार लगभग ५ बजे पानी के साथ और यदि प्रकृति गरम है तो थोड़े से दूध के साथ या मलाई के साथ निगल जावें, ६ बजे एकाध गोली ओट खाई जा सकती है, (यह खुराक बलवान की है, निर्बल को पहिले कम खाकर अनुमान कर लेना चाहिए, अग्यासी इस से अधिक खा सकता है) १० बजे मैथुन करना चाहिए, मैथुन पीछे गरम किया हुआ दूध मिश्री डाल कर जितना पिया जा सके पीवे जिस से कफज न हो ॥

गोली खाने के पीछे खाना नहीं खाना चाहिए, और यदि लुधा लगे तो और या आदि मोठी वस्तु थोड़ी सी खाना चाहिए, या खाना ३ घण्टे प्रथम खाया जा है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि गोली खाने के पीछे कोई वस्तु ऐसी न खाई जावे जो सड़ी या नमकीन हो, नहीं तो इदनेश्य पूरा न होगा ॥

इन गोलियों से खीगुना बन्दोज होती है, जिनकी शीघ्रपतन का फट्टिन रोग है, उनको खीगुना समझ भी हो लाय क्या मालूम होगा बाजों का अस्वास ही जाता है, कि पहिली बार शीघ्र स्खलित होकर दूसरी बार यथा इच्छा बन्दोज होता है, मूल्य ३० गोली २) नमूना ।

नोट—यही घातें जो इसके विषय में हैं अन्य स्तम्भकौषधियो पथा अकसीर न० ४१, ४२, ४३, के विषय में समझ लें ॥

अकसीर नम्बर २५, (त्रिवाता भस्म-बद्ध, सीसा, जस्त)—यही भस्म है कि जिसको बहुत से लोग भस्म सोना का कर बेचते हैं । क्योंकि इसका रंग पीला होता है । सदेव का स्तम्भ न इससे उत्पन्न होसकता है । क्योंकि वीर्यको गाढ़ा करने में अद्वितीय है । शुक्रदोष, वा भीशय रोग के लिए और है, यदि त्रिन् मक्खन में डालकर सिलावे, और नमक से परहेज रखें, तो धातु जोना नुरन्त दूर करे । और पुष्टि भी बहुत करता है । मात्र ३ रती से ३ रती तक, मक्खन या दूध के साथ । मूल्य प्रति तोल ४), ३ माशा १), डेढ माशा ॥)

अकसीर नम्बर २६, (स्वर्ण भस्म दर्जा अब्बल) चन्द्र रसी भी जो इस भस्म को खावे इस का प्रशंसक बन जावेग वृद्ध भी जवान हो जाता है । हृदय, मस्तिष्क, यकृत, वृकडे वामाशय मूत्राशय, मदनालुश, सब को विशेष शक्ति देती है । एवं जाडे यदि ३ माशे भी सेवन करलें, तो वर्षों की नष्ट हुई २ शक्ति लौट आवे । पट्टों को पुष्टिदायक, वीर्य उत्पादक, भी दूध को पचाने वाली है । जब मक्खन में खाला आरम्भ किया जाता है, तो जिनके मक्खन नहीं पचता वह थोडे दिनों के पश्चात पाव २ मक्खन एवं समय में खा लेते हैं आरपता नहीं लगता कहां गब । अग्नि कं बढ़ाने और स्थिर रखने वाली है । वृद्धों की लाठी और निःसन्तानों को सन्तान देने वाली है ॥

मात्रा एक कशकाश से चार चावल ~~वर्ग~~ ^{मूला} ~~मूला~~ ^{मूला} में ढाल कर निगल जायें, पश्चात्, उसी समय या आध घण्टा पीठे दूध जितना पचा सके पान करें। यदि, प्रमाशय का ध्यान हो, तो फिर प्रति मात्रा बंशलोचन २ रत्ती दाना इलायची ३ रत्ती, जवारिश मल्लगी २ रत्ती मिला लिया करें। उचित अनुपान विधि से कफज रोगों को हितकर है। मूल्य ८०)फी तोला, नमूना ४ रत्ती ४) दर्जा दोयम ४०) तोला मिश्रता है ॥

अकसीर नम्बर २७, [अन्न निर्यत्न न होंगे]—यह गोळियां प्रमेह, और शीघ्रपतन नाशक है धातुपुष्ट करके शुद्धरक्त उत्पन्न करती हैं विशेषकर स्त्रिभ्रित होने के पीछे एक गोली खाने से सारी सुखी जाती रहती है, और तीसरे पहर ३ गोली खाने से बन्धेज होता है। दैनिक खाने से एकरोप दूर होता है। मात्रासे ४ गोली तक दूध से खावे। भोग के पीछे की निर्धलता दूर करने के लिए विशेष रूप से हितकर है दूध प्राप्त न हो तो वेसे ही खावे, हृदयरंजन पुष्टि दायक है। मूल्य ६० गोली १) नमूना =)

अकसीर नम्बर २८, [तैलमालकङ्गनी]—कफज रोग नाशक, धातु व मस्तिष्क पुष्टिकारक है, स्मरण शक्ति को बढ़ाता है जिसकी स्मरण शक्ति निर्बल है वह अन्नय्य खेवन करें, नेत्रों की निर्बलता को भी हितकर है हथेली मलें तो आंखों में ज्योति आवे, स्तम्भनके लिए भी अद्वितीय है। हर्द कमर, अन्य अंगों का पीड़ा, गठिया आदि को हितकर है। मालिश भी की जाती है। हस्तकार को इसका तिला कराते हैं, र्दधान और चोटस्थान पर मलने से आराम आता है मात्रा २ बूँद से ६ बूँद तक पताशा में ढालकर

ऊपर से दूध पीवें। कफ प्रकृति और हृदय के वास्ते पान से आवें मूत्र प्रति शीघ्रि ४ की डामि () नमूना १)

अकसीर नम्बर २९, [जिरियान की दवाई] यह औषधि विशेष रूप में शुक्रमेद को हितकर है, विशेषत उनको जो कफज प्रकृति वाले हैं। शीघ्रपतन और स्वप्नशेष नाशक है, और पुष्टि कारक है, मात्रा १ गोली से २ गोली तक दूध के साथ। सूख ३२ गोली २), नमूना ४ गोली।)

अकसीर नम्बर ३०, [घातुवर्द्धक]—यह औषधि विशेष रूप से उनको हितकर है, जिन के वीर्य कम हैं, अथवा कम उत्पन्न होता है। इसमें वीर्य बहुत ही पैदा होता है, थोड़े दिनों के पश्चात् बल भी बढ़ने लगता। शुक्रशेष, स्वप्नशेष शीघ्रपात को हितकर है। शुक्रजनक हितकर वृत्तियों का संग्रह है। मात्रा ६ माशा से १ तोला तक, दूध के साथ, रात को सोते समय खावें। सूख की पाव २), नमूना २ तोले ॥)

अकसीर नम्बर ३१ (चन्द्रप्रभा गुटिका)—इस औषधि से २० प्रकार के प्रमेह यथामूत्रमेह, मूत्र में शकर का आना, पीतरंग का मूत्र होना, मूत्र के साथ धातु जाना, मूत्र वा दूध जाना या जल या दर्द के साथ आना, दूर होता है। पथरी बोभी हितकर है। प्रमेह के पीछे जो शरीर पर फुन्सियां निकल आती हैं उनको लाभदायक है। अशशारा, वीष्यदता, शूल, कषाजन, दरदवृद्धि करदशेष की शोथ आदिको गुणकारी है, पांडु कामला, मुख की ह्याही को दूर करता है। बवासीर, भगन्दर, नासूर, फमर दर्द, दमां, सांसी, नजली कफजरीग का नाशक है। स्त्रियों के मासिक धर्म सम्बन्धी रोग और पुत्रों के धातु रोगों को दूर करके सन्तानोत्पत्ति के योग्य है। एन्त और नेत्र रोगों में भी हितकारी है। शुक्रशेष,

शीघ्रपतन, को दूर करे है। मात्रा १ गोली से ५ गोली पानी के साथ खाया करे' पश्चात् दूध पीवे,। शुक्र रोगों में दूध के साथ, बवासीर के साथ बासी पानी, खूनी बवासीर में दही के मड़े, भगन्दर और अण्ड वृद्धि में त्रिफला के फल से श्लिवा में सिकंदबीन, कामला में छाछ पीढामो' में अदरक के पानी के साथ दे सकते हैं। (मूल्य ३१ गोली १), नमूना ८ गोली।)

तीर नम्बर ३२, (शाही नुसखा) — इस नुसखे में कोई धातु नहीं डाली जाती तो भी इसके सेवन से रूप जीवन व तेज की वृद्धि होती है। रक्त बहुत पैदा होती है। सब्जी भूख लगती है। पुष्टिदाता, धीर्यवर्द्धक, कामोत्पादक, दृष्टि वर्द्धक और हृदय मल्लि-
रुह, सकृत, को बल देने वाला है ॥

मामाशय और मूत्रशय को पुष्टि देने वाला, और अन्न पाचक है। शीघ्रपतन, कमर का दर्द, निर्बलता, के वाग्ने गुणकारी है। रक्त शोधक है। वाजीकरण है ॥

सदा सरदियों में इसका सेवन करने वाला प्रबल और रहता है। और व्याभाविक स्वप्न होता है ॥

मात्रा—परम प्रकृति के वाले ३ माशा। रूपाज प्रकृत के वाले १ माशा ताजे वा उवाले हुये दूध से हर रोज खार्वे ॥

१४ दिन के अन्दर २ अच्छी तरह काफी फर्क मालूम होगा। पय आदिक जो पीले लिखे हैं वैसे ही है। हां यदि लवण न खार्वे और गेहूँ की रोटी घी से चुपड़ कर चूरी या चूरमा बनाकर खार्वे और गिरियाँ दूध, घी, मक्कन, मलाई, इत्यादि का सेवन करें, तो बहुत शीघ्र लाभ देखें, और दुर्गन्धि घादि जाती रहे। प्रकृति अनुसार मात्रा न्यूनाधिक कर सकते हैं। (मूल्य ४ नमूना ॥)

अकसीर नभ्वर ३३, (आयुर्वेदिक टानिक)— आयुर्वेदिक टानिक मेदे इसका नाम इस वाले रक्खा है, कि अंग्रेजी टानिक औषधियों से इसका सुराविला किया जावे। सचमुच ही आयुर्वेदिक टानिक सब से बड़ा रहेगी। मात्रा ३ से २ तोला तक है, वीर्य सम्बन्धी रोगों के विषय में इसकी सेवन विधी इतनी ही पर्याप्त है, कि प्रात भोजन के पहले और रात को सोते, समय इसकी दूधलेखावें। यदि सन्तान न होती हो, तो स्त्री पुरुष दोनों एक या दो मास तक दूध से इस को सेवन करे। प्रत्येक ऋतु-स्नान के पीछे गर्माधान किया जावे, तो, दो तीन मास में परमात्मा इच्छा पूर्ण करें। स्त्री पुरुष के रज व वीर्य के दोषों को दूर करके सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाता है ॥

पुष्टिकारक है। वीर्य साध, स्वप्नदोष शीघ्रपतन को दूर करता है। शुद्ध रक्त उत्पन्न करता है। शारीरिक बलको बढ़ाता है। हृदय मस्तिष्क, और यकृत को पुष्ट करता है। वात प्रकृति वालों को विशेषतः गुणकारी है इसके सिवाय निम्न लिखित रोगों में भी गुणकारी है.—

गठिया, घुटने, कमर पसली व छाती का दर्द, रीघनवायु, जादि सर्व वातज रोगों के वाले गोली साधम प्रात गरम पानी के साथ खावें, या मधु तथा अद्रक के रस अथवा ताँठ के पाटे से खावें, जो का सेवन रखें, दूध कम पीवें ॥

मधुमेहः— मूत्रातिसार और उस में शक्कर अलव्युमन आदि का माना,—हरड को छिलका, आमला, दाकहलदी, नागरमोथा देव-दाक प्रत्येक दो भागो चार गुना पानी मिलाकर क्वाथ बनावें, और छान कर मधु मिलाकर उसके साथ साथ १ गोली खाया करें ॥

मोटापा—मधु ३ तैला पानी में घोलकर उसके साथ १ या दो गोळियां प्रातः निहार मुख खाँसें और रिग्घ (Fats) बरनु से परहेज करें। व्यायाम खूब किया करें ॥

पांडु, कामला, हलीशकः—एक गोली गोमूत्र के साथ खाया करे। या कासनी के रस से या कालनी के अर्क से ही खावे। कोष्ठबद्धता हो तो उसको दूर करले छाछ भी हितकारी है ॥

श्वेत कुष्ठ नवीन—निम्ब के छिलके के काढ़े में रोज एक या दो गोळियां खाया करें ॥

सृजन तथा शोथ—सौरु, मशी, तथा कासनी के अर्कों को मिलाकर सोयम प्रातः खिलावे ॥

जलोदर, कठोदर—पुनर्नवा, (इटसिट) की जड़ ६ मासे लेकर उसको क्वाथ करके इसके साथ एक या दो गोली खिलाया करें ॥

नेत्र रोग—विफला के पाना में मधु मिलाकर उससे १ गोली खाया करें। और घी का खूब सेवन करे ॥

चूहे का विष और प्लेग—घी के साथ १-१ गोली प्रातः मध्याह्न सायम को देवे। ईश्वर कृपा करेगा ॥

प्रदर—रसौत, बिलगिरी, दांडहलदी चिरायता समान भाग में मिलावे। और २ मासे एक गोली के साथ मिलाकर बकरी के दूध या पानी के साथ खाये या उपरोक्त चीजें ३-३ मासे लेकर क्वाथ करके इससे खिलावे ॥

सृत्तु अभाव—सौंफ, लोदे, गावजुवान, प्रत्येक ६ मासे लेकर क्वाथ बना का इसके साथ रजसकला होनेके छाल दिन पहिले

आरम्भ करें। और जब तक ऋतुखाव होता रहे सेवन- किया करें ! इसीतरह जब तक सर्वथा आराम न हो प्रति, मास किया करें ॥

अण्डकोश की शोथ—त्रिफला के कांटे के साथ देवें ॥

अण्डवृद्धि—त्रिफला के कांटे के साथ सायम प्रातः एक गोली खिलावे ॥

कण्ठमाला—कचनार के वृक्ष के १ तोला का बनाकर उसके साथ १ गोली प्रातः तथा १ सायम् को खावें। घी के साथ खाने से भी गुण करेगी। मतलब यह है कि इस दवाई को योगवाही कहा है। और बहुत से रोगों को गुणकारी है ॥

रोग—वथाः—कफ युक्त सांसी श्वास, जुकाम, नजला आदि में पिपलासूल, नागरमोथा, बड़ी हरड, प्रत्येक ३ माशे के कांटे के साथ देवें। योगवाही का मतलब यह होता है कि जिस अनुपान के साथ दी जावे उस बीमारी को गुण करती है। इस अपनी बुद्धि के अनुसार अन्य रोगों में भी बरत सकते हैं। और उपरोक्त रोगों में अपनी बुद्धि के अनुसार अनुपान बदल सकते हैं। सर्व प्रकार की शक्ति के वालते दूध से सायम प्रातः खानी चाहिये। गरमी में यथा गरम प्रकृति वाले इस्वगोल भी भूखी ३ माशे मिला लिवा करें। मूल्य ६४ गोली ४), नमूना ८ गोली ॥),

सीर नं० ३४ (शुकमेह की अनुपम औषधि)—
वीर्य स्राव के वालते यह औषधि अठितीथ है। शीघ्रपतन और दोष को भी दूर करके सदैव का स्तम्भन प्रदान करती है, वीर्य गाढ़ा होकर सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनता है। यह दो प्रकार की तैयार की जाती है। अफसीर नं० ३४ (क) और अफसीर नं० ३४ (ख), (स) में वही औषधियां हैं जो (क) में हैं। परन्तु उनके सिवा कस्तूरी, मन-

विध्वंसी, शिलाजीत वर्ण और रीत्य मद्य, कृष्णाम्बक मरुम, भीमसेनोफपूर, आदि विशेष है। जिससे यह उपरोक्त गुणों के प्रतिरिक्त हृद्य, मस्तिष्क सूत्रागय, पकृत और आमाशव को भी पुष्टि देता है ॥

अफीम के खाने योग्य है। स्तम्भन शक्ति स्थिर होती है। अफीम का इसमें नाम तक नहीं। फिरभी उससे उच्चम बन्धेज करत है। धातु जानो इस तरह भागता है जैसे गर्दभ के शिर से सींग। सर्व शरीर के पट्टे, मांस पिंड, जोड़ इससे गठे हुए रहते हैं। मात्रा १-२ गोली सायम प्रात ॥

यदि पित्त प्रकृति हो तो ३ माशे ईश्वगोल की भूसा में १ गोली रख कर शरयत नीलोफर या दूध से खा जावें। अगर शीत प्रकृति हो तो पानी से एक गोली सायम प्रातः खावें। अथवा केशर, जाय-फल, जापित्री, तज, दारचीनी, लौंग, समान भाग मिलाकर रखें। और आध रती इस चूर्ण के साथ १ गोली मलाई में रख कर खा जाया करें। जब बीर्यस्त्राव दूर हो जावे, तो पुंसत्व के वास्ते इन गोलियों को दूध से खाया करें। मूल्य अकसीर नं० ३४ (क), ३२ गोली का २५, नमूना आठ गोली ॥) मूत्र्य (ख) ३२ गोली ५) नमूना ८ गोली १।)

अकसीर नं० ३५ (लोहासव) - पौष्टिक है पट्टों की शक्ति देने में अनुपम है। शुद्ध रक्त पैदा करके छोड़े दिनों में सुख करदेता है। शरीरक शक्ति को बढ़ाता है। निरंतर सेवन किया जावे तो बालो को श्रेत नहीं होने देता। गंठिया व अन्ध वात कफ रोगों को हितकारी है सुस्त पट्टों को चैतन्यता देने में अनुपम है। पकृत रोग, श्वास, खांसी, कफ, बीर्य रोग, रीघनवायु, आदि के वास्ते रामबाण है। मात्रा जडान के वास्ते ३ माशे साधारणतया है। परन्तु २ माशे से आरम्भ करके प्रकृति के अनुकूल ५ माशे तक बढ़ा सकते हैं सरदियों

में अधिक गुणकारक है। रात की सोते समय चमच में डालकर पी जावे और ऊपर से दूध पीले। मूल्य दो घोंस का २) रुपये, नमूना ॥)

अकसीर नं० (३६)—सुख पट्टों को तेज बनाने में अनुपम है। जिनको केवल मेथुन शक्ति की स्थिति होवे इस तेल का सेवन करें। खाने और लगाने दोनों काम देता है। रग और पट्टे फिर से ही देत होजाते हैं। (nervous debility) के वास्ते कोई डाक्टरों दवाई इसकी राबरी नहीं कर सकती, एक दो हफ्ते में ही आश्चर्य जनक मैथुन शक्ति पैदा होने लगती है। अचेत सचेत, और फायर शूर होते हैं। खाने के वास्ते इसकी मात्रा १ बूंद है। परन्तु पहिले रोज बहुत थोड़ी एक तिनहा को लगाकर तिनहा मंक्खन में पोछ दे। और मंक्खन को निगल जावे इसी तरह रोजाना थोड़ी बढ़ावे, यहां तक कि प्रकृति के अनुसार बून्द से ज्यादा भी खा सकते है। १४ दिन सेवन करके १ सप्ताह छोडदे। फिर भी यदि इच्छितफल प्राप्ति न हो तो इसी तरह और सेवन करें। दूध घी मंक्खन मलाई का खुर सेवन रखें। लगाने के वास्ते २—३ बूंद इन्द्रिय पर लगाकर ऊंगली से धीरे धीरे २ दो चार मिन्ट तक मालिश करें। अण्डकोश व सीवन को न लगाने दें। और ऊपर से पान अण्ड का पत्ता या भोजपत्र बांध दें। सेवन समय इन्द्रिय को पानी से बचावे। तेज नहीं है, यही तो खूबी है कि उपादन करते हुए भी पट्टों को मजबूत करता है। सा.दियो में इसका सेवन अधिक उप-उपयोगी है। कफज, वातज रोग, गठिया, घुटने का दर्द, शीघ्र वायु, दमा, खांसी, आशक्ति पट्टों की निर्बलता आदि को हितकारी है। एक शीशी के ५) रुपये नमूना ॥) ॥

अकसीर नम्बर ३७ [कुचलापाक]—यह एक युवाना प्रयोग है। अत्यन्त वाजीकरण है। फरर के दर्द को दूर करता है। बूदों और शीत प्रकृति वालों को बहुत ही अनुकूल है। २० दिन

खाने से गये गुजरने को परधान बनाता है गुठला पड़ने को ताबत देने के वास्ते प्रसिद्ध ही है, डाक्टरों में इससे बढ़कर कोई चीज पड़ने को बभारने वाली वर्णन नहीं की है। मात्रा २ माशे खापर ऊपर से दूध पीये। या तीसरे पहर को खाया करे। कीमत फी पाय ८), नमूना १) रु हमने अपनी बुद्धि से अत्यन्त फाड़ने कुचले को मीन कर दिया है ॥

अकसीर नं० ३८, (शीघ्रपतन का इलाज)-यह दवाई हृदय और नस्तिष्कको शक्ति देती है। तबियत खुश रहती है आनंद जनक शोकरतग के पारसे विशेष कर से तैयार की जाती है। १ गोली को पोंडा पीस कर द्वाध सेर दूध में डालें। और प्राग पर रखें, १-२ उबाले आवायें तो दूध का रंग पीला हो जायेगा, पय बरा हंडा करके मिथी मिलाकर पीजायें, प्रत- वा रातको सोते समय जैसे सुभीताहो। गरम प्रकृति वालों को १ गोली पर्याप्त है, शीघ्र प्रकृत वाले १-२ गोळियां भी खा सकते हैं १५ दिन के पश्चात् प ने से उघंटा स्तम्भन होगा, और ज्यों २ सेघन करंगे ज्यादा ही होता जायेगा। मूल्य ६५ गोली २), नमूना १६ गोली ॥

अकसीर नम्बर ३६, [वीर्यवर्द्धक, पुष्टि दायक और शीघ्रपतन निवारक]—यह दवाई शीघ्रपतन के वास्ते अकसीर नं० ३८ की तरह विशेष हितकर है, विशेषता इस में यह है, कि यह वीर्य को खूब पैदा करती है, और बढ़ा करती है, शारीरिक शक्ति को बढ़ाती है, और कामोत्तेजक भी है, नास्तिष्क को दृढ करती है, दिमागी काम करने वाले के वास्ते न्यायवर्द्ध है। रुखा या स्तम्भन होता है, पर्याकि वीर्य उत्पन्न होने के साथ २ घाटा भी होता जाता है, वीर्य आव को दूर करती है और हतना जो श्दार होते हुए भी विष्टम्भी नहीं है, मात्रा ६ माशा से १३ तोले तक है। साधारणतया १ तोला प्रमाण डीक पांठा है, भाष सेर या तीन पाय दूध जोकर एक में डालें, और

दूध की मात्रा पर रखें, खीर जैसा गाढ़ा हो जाये और नर्स म रुक
 हतार कर काँठ मिलाकर खाजावे, स्वादिष्ट होगा। (अगर शारी-
 रिक और मस्तिष्क की शक्ति बढ़ाने की इच्छा हो तो खीर की तरह
 गाढ़ा हो जाने के पश्चात् इसमें काँचे पाव या छटाँक भी डालकर
 भूनकर जैसा कि खोवा बना जाता है, काज होजाये तां वतारकर मिश्री
 या काँठ मिलाकर खा जावे, इस तरह टी में पकाया हुआ दो चार
 सताह पका भी रहे तो खराब नहीं होता, मूल्क १ पाव का २) नमूना
 १ छटाँक १।) घा.ठ घाना ॥

अकसीर नम्बर ४०, [स्वप्नदोष निवारक]—यह
 दवाई विशेषरूप से स्वप्नदोष के वास्ते तैय्यार की गई है, यह वीर्यलाव
 और शीतलता को भी नाशक है । यदि खावम-स्तम्भ प्रकृति अनु-
 सार हो तीन गोलीयां दूध या मलाई से खावे तो स्तम्भन भी होता है।
 १ मास के बच्चन से स्वप्न दोष की अधिकता जानी रहती है । सदा
 के वास्ते तो स्वप्नदोष दण्ड हुआ नहीं करता, मात्रा स्तम्भन
 को हो तोन गोलीयां । और स्वप्नदोष वगैरह के वास्ते १ गोली
 तीसरे पहर काँ घाघ पाव गरम दूध से या थोड़ी मलाई या केवल
 पानी से खा लिया करें । मात्रा ३ गोली से २ गोली तक है,
 १२ गोली १) नमूना = गोली चार घाने ॥

अकसीर नं० ४१, (कामिनी बशीकरणा)—यह दवाई
 बशीरों के वास्ते है इसका सब से मुख्य फायदा यह है, कि यह शीत-
 पतन को दूर करती है, जो लोग कहा करते हैं, कि उन्हें स्तम्भन नहीं
 होता, यह जरा इसे आजमा-देख, तीसरे पहर को एक गोली थोड़े दूध
 के साथ खा लें, कोई नमकीन या खट्टी वस्तु न खावे, दूध, मलाई
 आदि खा-सकते हैं, जैसा अकसीर नं० २४ के वर्णन में लिखा गया
 है । इस से इ. गुणा स्तम्भन होगा । यह मलाशयरोधक है, इस वास्ते
 पीड़े से गरम दूध पीने, सब इजब हो जावेगा, और सुबह कज्जीबन

भी कम होंगे, एक गोली तो रहे जयल भी सुरोक है। लाधारण मनुष्य को प्राणी गोली ही पर्याप्त है ॥

इस गोलियां रोज सुबह दूध के साथ एक मास तक खेवन की जाये तो शीघ्र रक्तन दूर होता है स्वप्नदोष और धातुधान का सत्थानाश हो जाता है, थोड़े ही दिनों में शक्ति बहुत बढ़ती है, सुगंधि परा होती है, नित्य रोदन के लिए रुं छे ई गोली तक लेनी चाहिये। एमने करतूरी, सोना, चांदी, मोती, बैलर, अम्वर, मोनसेनोकाफर इत्यादि चीजे सन्मिलिन की है, जिनको ईश्वर ने लाभार्थ दिया है उन्हें चादि-वे कि साक में १-२ मास ऊका इन मोर, ध का सेवन किया करें पूरा शक्ति प्राप्त होती है, मुख्य एक गोली का परकणना ३० गोली के २५)२० ॥

अकसीर नं० ४२, (अनुकम औपधि)-यह दवा ईमे बहुत थोड़े समय से मिखी है और एमार दास है, कि रतन्मन करके घाली पेशी दूसरी दवाईं जनी जहनी भईं मिलेगी। एतन्मन की औपधियां सबज करती हैं, जब कि यह जलटा कपेक को तोड़ने वाली है, एतन्मन की औपधियां अधिक खेवन करने से अजमरी प्राधि रोग करती है, परन्तु यह जलटा अजमरी को तोड़कर पेशाव साफ करती है, एतन्मन की औपधियां मादक होती हैं और पुसत्वशक्ति को हानि पहुंचाती है, परन्तु यह भेद्युन शक्ति को बढ़ाती है, और पट्टों को हीसे नहीं होने देनी, स्त रगत दवाइयां सिर दर्द करती हैं, यह वैजा भी कुछ नहीं करती, है, यह लाधारण रोज की खाने की चीज है आश्चर्य होता है, कि इस विषयपर जाखों गुणचे लिखे गए परन्तु न जाने यह छोटी सी चीज क्यों किसी को न मालूम हुई, ऊपर लिखे गुणों के अनिश्चित इस्तेमाल वधेज भी खूब होता है, ३-५ गुण

तो साधारण] घात है। इस की मात्रा चार से आठमासे तक है जो जवान आदमी है, षट् आठमासे पहले ही दिन खा सकते हैं, परना पहले कम अर्थात् चार पांच मघे खानी चाहिये। सायम् लमय रुहद में मिलाकर खा जायें, कट्टी खारी चीजों तक का दर्शन न करें, १० इंचे के आन्दाज में इलका प्रभाव होगा। इसको प्रति दिन भी खया जा सकता है जब कि यह शीघ्र पतन की उत्तम औषधि प्रमाणित होगी मात्रा ३ माशा प्रातः और ३ माशा सायं शब्द में चटे या दूध से खाये यदि एक ही समय खानी हो तो ५ माशा खावे इस अजीब दस्तु की कीमत हमने बहुत न्यून रखी है, इस दवाई की भाजून तैल खादि बनाने की हम तयारी कर रहे हैं। आठ तोले दवाई की डिब्बिया के दो रुपये। एक तोला नमूना के चार आने ॥

अकसीर नं० ४३—अत्यन्त स्तम्भक— यह अकसीर नंबर ४१ से भी दढ़ कर है। अठ गुना तक स्तम्भ होना है। जिन को पहिलेही काफी बंधेज है उसको नखा तुर्शी (जब तक खटाई न खाई जाय माशिक घाल. मामिला, सलके। मात्रा १ गोली उष्ण काती घाले तं अभ्यासीनहीं हैं प्रथम अर्द्ध गोली देवन करें, जो अभ्यासी हैं वह दो गोली भी खा सकते हैं, शेषविषय देखो अकसीर नं २४ के वर्णन में।

अकसीर नं० ४४, (फलकसीर)— इसके गुण नाम से प्रगत है। इसके खाने से हर्ष और आनन्द आता है। सुख वर्द्धक है, हृदय व मस्तिष्क को आनन्दमय पुष्टि देती है शुक्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष का नाश होता है। यदि तीसरे पहर को २-३ माशा खा लेवे तो बहुत आनन्द आता है। स्तम्भक और सुखदायक है। कस्तूरी, अम्ब्र याकूठ, जमरुंद, मोती, खोना, चाँदी केसर आदि से तैयार होती है (सूत्र ५ तोला २) नमूना १ तोला ॥)

अकसीर नं० ४५—जब विशेष ज्वर पर हीलापन होजाता है, या थोड़ी देर पीछे रोग समय निर्वलता होजाती है, तो यह औषधि बहुत हितकारक है। शीघ्र रक्त को भी दूर करती है। मात्रा १ माशा तक है। दैनिक दोबन के वास्ते १ माशा प्रातः १ माशा तीसरे पहर रच्यते है। शीघ्रपन दूर होकर स्वप्न होगा। और आदर्य-कृता से पहिले मिथिज होजने को जान लोग। मुख्य १ तोला १) ममूना ६ मात्रे घाठ आना)

अकसीर नं० ४६, अम्बरी शिगरफ—यह एक बहुत ही हितकर घबघरक मिदरफ भरम का योग है, जिसके भीतर केशर, दस्तूरी, अम्बरादि सम्मिलित है, और रक्तता दूर करने के लिये दूध व नारयल विशेष विधि से मिलाया हुआ है, मात्रा अर्ध माशा घट्टकज आने पर घटाते २ हो माशा, मातुली १ माशा तीसरे पहर दूध के लय, प्रायः पहिले ही दिन प्रभाव होता है मुख्य ३) तोला ६ माशा १॥)

अकसीर नं० ४७, पौष्टिक शीतल—यह औषधि इन लोगों के लिए है, जिनकी प्रकृति बहुत गरम है, कोई पौष्टिक गरम औषधि उनके अनुकूल नहीं आ सकती, या जोजाक का रोग था, पेशाब में जलन बाकी है, लाली बरसती नहीं गई, या मूत्राशय के अन्दर इतनी गरमी है कि जरा भी गरम व रक्षापथि रोग को दूर करने से रथान में रहती है, सब यह कि रक्षा गरमी है इसको दिया जाता है, प्रमेह शीघ्रपन, स्वप्नदोष, जोजाक को दितकर है, आनन्द हायक है नस्तिष्क को तर व ताजा रक्तनी है, इनसे उचित के गरमी हट जाने और प्रमेहादि दूर हो जाने के पश्चात् पौष्टिक औषधि ही दाती है, मुख्य ॥) तोला, मात्रा १ से २ माशा तक स्थाय प्रतः पहरों के दूध से घबत नीलोफर से या सबसे अच्छा दूध का पानी है तीन पाच या चार दूध पत्रि पर रफें, सवाज आजाय तो इलमें एक नीम्बू मिलोड़ें, बा

आध शब्द वही डालते फट माथेगा साफ पानी निधार लें, पनीर मूत्र खाना है यह पानी दूध का पानी है इसमें मीठे के वास्ते शर्करा नीली का या मिथी मिठा लफते हैं ।

अकसीर नं० ४८—यह औषधि शुक्रपट्ट व स्वप्नरोप नाशक है, शरीर को मोटा करने वाली है, रंग को जाल करने वाली, शारीरिक बल को बढ़ाने वाली, आमाशय को बल देने वाली, दाबम कबज को दूर करने वाली है । मात्रा १॥ मात्रा से लेकर ३ मात्रा तक जिनको कबज साथ हो यह द्रव ई अन्व औषधियों के साथ ही खात है, जिनके जरा से ख्याल से उतेरना होकर दीर्घ निकल जाता है उनको विशेष कर से गुणकारी है । मुख्य ४) पाव, आधपाव २) रु०

अकसीर नं० ४९(गोली कस्तूरी)—यह अमीरो के वास्ते है, इनसे सेवन से जीवपटन दूर होता है, हो सताइ के पश्चात् है दबोटा, दुग्ना काफ अशुभ देखेगे, इसके अतिरिक्त वाजीकरण है इसके सूखने से मुख में दुगंधी उत्पन्न होती है, कोई नशीली वस्तु इसके नहीं है । मात्रा १ गोली पातः, अनुकूल आने पर १ घंटी सायरा को भी उपर से दूध पीवें, मुख्य ४ गोली १), १६ गोली ४) कपसा १२ गोली ७) रु० ॥

अकसीर नं० ५०—राज्या और अमीरों के योग्य । खं मुख समान । वाजीकरण तथा पौष्टिक । प्रथम दिन से ही बल वृद्धि आरम्भ होजाती है मुख्य ३० गोली १६) ६ गोली ३), १ गोली तिसरे पहर को दूधसे खावे, यदि एचजावे तो दूध में घृत सम्मिलित करना चाहिये ॥

अकसीर नं० ५१ (अपूर्व चिन्तामणि रस)—वाजीकरण अर्ध प्रकार के प्रमेद को दूर करती है । ज्यादातर नाकक घात-रुफ.

उदर वायु, दिग्ग की कमजोरी, धरुचि, घमग, गिर शूल-शयशूल-
 चहरापन, उदर, घबलाता, गुद, प्रसून रोग, गर्भ सम्बन्धी रोग, प्रदर,
 सोमरोग-त्रिदोष-क्षीणरोग-इत्यादिकों को हितकर है। मात्रा सायं
 प्रातः एक २ गोली दूध से (मूल्य ६ गोली १) ,

अकसीर नम्बर ५२। वसन्त कुसुमाकर रस—सांज्ञ-
 घट का प्रसिद्ध योग—जयावतीस, सर्षप प्रकार का प्रमेह का धरनिया
 इलाज है। मात्रा एक २ गोली सायं प्रातः इलायची के चूर्ण और
 तीन माशा शहद के साथ प्रमेह-जीघ्रपतन-रघुप्रदोष-वीर्य्य डीनता
 के लिये सायं प्रातः एक २ गोली दूध के साथ खावे। अमल पित्त
 के लिए एक २ गोली सायं प्रातः एक माशा श्वेतचन्दन के साथ
 तीन माशा मिश्री में रख कर नारयल के पानी के साथ खिजाव।
 यदि नारयल का पानी न मिले तो नीलोत्तर का अर्क वा जयपत्र के
 साथ दे दे। मूल्य नमूना ६ गोली २)

अकसीर नं० ५३—यह गोलियाँ विना किसी भस्म या
 मादक वस्तु से तय्यार की गई हैं। जीघ्रपतन सायानाश करने
 और वन्त्रेण के लिये अद्वितीय है। मात्रा एक २ गोली सायं प्रातः
 दूध से खावे मूल्य ४० गोली २) नमूना १० गोली आठ आना ॥

अकसीर नं० ५४—यह चूर्ण है। पुरुषों का वीर्य्य और
 स्त्रियों का दूध बढ़ाता है और बन्को शुद्ध करता है। यड़ी ही उत्तम
 वस्तु है। शरीर का हृष्ट पुष्ट और रुचि को शुद्ध करता है। स्त्रियों
 ववासीर के खून को रोकता है। मात्रा ३ माशा प्रातः चारात्रि को
 जिस समय सुभीता हो दूध के साथ, मूल्य एक पायो २) नमूना एक
 छटाइ ॥)

मिलने का पत अमृतधारा लाहौर।

अकर्मर नं० ५१—चूर्ण है । क्षयप्रशोष भाजों विशेषतः विद्यार्थियों के लिये पड़ी उपयोगी वस्तु है । मस्तिष्क को बज्ज्वत और स्मरण शक्ति को बढ़ाता है। माना तीन भाशा साथ प्रातः दूध के साथ, मुख्य एक पाव २) नमूना एक छटाद्र ॥)

अकसीर नं० ५६—यह अत्यन्त पौष्टिक है । यदि ५ भाशा तोकरे पहर दूध के साथ सेवन की जाय तो एक ही दिन में अपना प्रमात्र दिखलाती है । यह शीघ्रपतन दूर करने में अद्वितीय मानी गई है । इस में कोई अस्म नदी पड़ी है । इसको हर अवस्था और हर ऋतु में सेवन कर सकते हैं । खुराक १॥ भाशा प्रातः और १॥ भाशा सायम दूध के साथ सेवन करना चाहिये, और प्रकृति के अनुकूल हो तो ३ भाशे तक सेवन कर सकते हैं, मुख्य माध पाव का २), नमूना ॥)

अकसीर नं० ५७—रजप्रशोष के लिये है, किंगेप कर उन लोगों के वास्ते जिनका विवाह नहीं हुआ है । खुराक ५ भाशा प्रातः ५ भाशा सायं पानी से । मुख्य ०) फी शीशी ॥

अकसीर नं० ५८ स्वर्ण आसय—हृदय व मस्तिष्क को पुष्टिदायक है और मधुन शक्ति को वृद्धि करता है । हृदियों इत्यादि में आतशक नादिके कारण जो पीड़ा होती है उसे दूर करता है । आतशक के तीसरे दर्जे के सब रोगों में लाभदायक है । हिल्ट्रिया मृगी नादिके में भी गुणकारी है । खुराक दोना समय भाजनोपरान्त पानो के चम्बच में । यदि स्तंभन के लिये जानी हो तो ८-८ बूँद खुराक रखें, और पीठे थोड़ा दूध पीवें । मुख्य २ ड्राम ४) ६०

मिलने का पता मसूनाधारा छापीर ।

अक्सिर नं० २६ (शीघ्रपतन की अक्सिर दवाई)
 २० दिन खाने से स्वाभाविक स्तन होता है। कफज रोगों के लिये
 अधिक लाभदायक है, मूल्य २० रुद्राक २॥)

अक्सिर नं० ६० (मरौश पुष्प पृष्ठ)-सधि पीडा, व
 मृगी आदि को दूर करने में बहुत उपयोगी है। यह बहुत पोष्टिक
 और स्तनक है। खाने और गाने दोनों काम में आता है। पहले ही
 दिन प्रभाव दिखता है। मूल्य प्रति तोला २)

*अक्सिर नं० २७ (घ)-इसमें कस्तूरी आदि औषधियां
 और डाल कर अधिक स्तनक व लाभदायक बनाया गया है। मूल्य
 ३२ गोली २) ६० ८ गोली ॥) है ॥

पारद शुद्धिका—पारा के गिलास में दूध पीने के जो गुण हैं,
 यह इस गोली को दूध में लड़का कर पाये से है। यह गोली दूध में
 नहीं छुलती, और एक प्रकार की विद्युत शक्ति उसमें भर देती है।
 मुख में रखने से बल बढ़ता है। स्तनमन होती है दूध अपना पूरा
 प्रभाव दिखाता है, यह पोष्टिक, व शीघ्रपतन व स्वप्नदोष को दूर
 करती है। इसका सेवनविधि पत्र औषधी के साथ भेजा जाता है
 मूल्य बड़ी गोली १) छोटी ॥)

शुद्ध शीलाजीत—शुक्रमह, मृत्रातिसार प्रर, असून मूत्र
 वृच्छ, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष आदि का हितकर है। बाजीकरण है,
 लम्बोग के पीछे खाने तो निर्वलता दूर होती है। छाती के रोग

~ जब कि पुस्तक पहुंचत सी छप चुकी थी तब यह औषधि तैयार
 हुई इस वाले अक्सिर नं० २६ के साथ पृष्ठ पर नहीं लिखी गई ॥

राजयक्ष्मा, जीर्णज्वर को हितकर है। चोट पर देने से बड़ा लाभ होता है। टूटी हुई हड्डी को जोड़ती है। इस के अतिरिक्त और बहुत से रोगों को हितकारी है। बढिया अकसीर है। इसकी सेवन विधि पत्र औषधि के साथ भेजा जाता है, इसे प्रायः प्रमेह, स्व नदोष सोजाक, कुर्ह, आदि के वास्ते वज्र भस्म और शुद्धशिलाजीत अ सली समान भाग मिला कर दिया करते हैं। ३ रती सायम प्रातः दुध आदि से खिलानी चाहिये। जो लोग इसका सेवन करते हैं बहुत लाभ बटाते हैं। यह शुद्ध रक्त उत्पन्न करके, शरीर को गांठ देती है। मूल्य १ तोला १॥) साधारण 1-) तोला और एक शिलाजीत में क्षण भस्मादि मिलाकर विशेष रूप से घनाते हैं जो सर्व रोगों के नोशने और बल बढ़ाने में अद्वितीय होजाती है। मू० २०) तोला।

नाट—अकसीर नं० ७ अकसीर नं० १८ अकसीर नं० १९ अकसीर नं० २५ और अकसीर नं० २६ के वर्णन में जो भस्म संखिया शिद्धरफ, वंग दर्जा अञ्जल, त्रिवंग-भस्म और स्वर्ण भस्म दर्जा अञ्जल का वर्णन हो चुका, इन के अनिरिक्ता

अन्य भस्में

जो कि वीर्य विकारों में वरती जाती हैं।

सेवन विधि इन सब के साथ भेजी जाती है। यहां लिखने से बहुत स्थान चाहिये ॥

प्रवाल भस्म-पित्त प्रकृति वालों, शुक्रमेह ग्रस्तों को दी जाती है।

मिलने का पता अमृतधारा लाहौर।

सुस्ती की बड़ी उत्तम औषधि है। पुरानी शिर पीड़ा, अघरमरण, नजलो, प्रतिश्याय, रक्तवमन-वक्ष्या को हितकर है। मृत्राशय की उष्मा को दूर करता है। मूत्रजलन को भी हितकर है। मूल्य १ तोला ॥ ६ माशा ॥

संखिया भस्म—वातज, कफज, रोगों सन्धिघात अर्द्धांगवात, कफजकाल, श्वास, कटिपीडादि को हितकर है; उत्तेजक है। मूल्य १ तोला ५), ६ मोशा २॥), १॥ माशा ॥८)

चांदी भस्म—शुक्रमेह, रक्तशोष, शीघ्रपतन, दृश्य मस्तिष्क व वायुशय का निर्जलता धातु जीणता, को हितकर है। प्रमेह, दृश्य की घड़कन को भी गुणकारी है। मूल्य २ तोला ८ रूपया ३ माशा २), नमूना १॥ माशा १)

लोहभस्मशिङ्गरफा—इह भस्म फौलाद व शिङ्गरफ के मेल से की जाती है। धातु के रोग यथा शीघ्रपतन, शुक्रमेह को दूर करके उत्तेजना को बढ़ाती है। शुद्ध रक्तोत्पन्न करती है। यकृत को बल देती है, रग की श्वेतता को दूर करती है। मूल्य १ तोला १॥), ३ माशा १=)

फौलादभस्म (दर्जा अन्ववल)—यह असली फौलाद की भस्म भी कई मासों में तैयार होती है। बड़ी उत्तेजक है। शुद्धरक्तोत्पन्न करके, चेहरे को थोड़े ही दिनों में लाल करती है। मूल्य ५) तोला ६ माशा २॥) डेढ़ माशा दस माना

फौलादभस्म—धातुजीणता, शुक्रमेह, शीघ्रपतनादि, को हित

मिलने का पता भस्मधारा लाहौर।

कर है, यकृत का बलशुद्धक है रग को माल करती है। मूल्य ५॥
रूपया तोला, ३ माशा ॥=) इस धाना

लोहभस्म--यह उष्ण लोहे से सामान्य रूप से तैयार की जाती है, साधारण गन्धकानों से वर्ती जाती है। मूल्य ॥) तोला ३ माशा ॥)

कुक्कुट-ड छिलका भस्म--श्वेतप्रदर, सोमरोग, शुक्रमेह, को दूर करती है। शीघ्रपतन को बहुत हितकर है। बहुत बढ़िया उष्ण जक है। स्त्री को क्लिष्टावे तो यकृत योनिके सृश को मूल्य १ तोला ३) ६ माशा ॥) ४, १॥ माशा ॥=)

मरुदूर भस्म--यकृत रोग, कामलो पाण्डु रोग, शोथ, ज्वर मूत्राशय की निर्बलता को हितकर, और शीघ्रपतन को भी ज्वर क्रि रोगने, गक्ति की निर्बलता के कारण से तो, बहुत गुणकारी है। मूल्य १ तोला १॥), ३ माशा ॥=)

सीसा भस्म (दर्जा अत्यक्त)--यह पीत रंग की सीसा मूल्य अत्युराम है। वाजी करण है वीर्य के कर्ब रोगों को हितकर है। मूत्र कुण्ड और लोजक, कुरह को भी हितकर है। उचित मनु-पान से सर्व रोगों में दी जाती है। कफज रोग खासी संग्रहणी बधाहीर, को दूर करती है। काम देव की बुद्धि करती है। मूल्य १ तोला १०) रूपया, ३ माशा २॥रूपया, १ माशा १) रूपया ॥

सीसा भस्म--मूत्रकुण्ड के बालते हितकर है। कुरह को भी गुणकारी है। मूल्य १ तोला १॥), ३ माशा ॥=)

बद्ध व पारद मिश्रित भस्म--उत्तेजना शक्ति को बढ़ाती है शुक्रमेह शीघ्रपतन, रक्त्तदोष, को गुणकारी है। १० प्रकार का प्रमेह.

सोम रोगादि को दूर करती है। सोडाफ. कुर्द को हितकर है।
 मुख्य १ तोला ६) ३ माशा २), ११ माशा ३) ४०

ताम्र भस्म—राजीकरण है। कफज्वर वातज रोगोंका मूलो-
 च्छेद करती है, कम्पवातआदि को दूर करती है। जलोदर को
 हितकर है। मुख्य श्वेत रंग का ८) तोला, ३माशा २), १॥ माशा
 १) ४० है। और कृष्ण रंग २) तोला ३ माशा ॥) काना

अनविषमोतीभस्म, (मखारीद् नासुफना)—हृद,
 बल्लत, मरिहत्क को बलशायक, शीघ्रस्तन, स्थानशोष, शुक्रमेहादि
 निवारक है। मुख्य ३० ४० तोला, ३ माशा ७॥), ४ रत्ती १।)

रस सिन्धूर—वैद्यक की प्रसिद्ध औषधि है। यह रसायन
 है, उत्तेजक है, इसकी वैद्यक ग्रन्थों में बड़ी प्रशंसा लिकी है। बुध-
 क्षित पारा से तैयार कृत का मुख्य २०) तोला है। और शुद्ध पारद
 से तैयार कृत का मुख्य १० ४० तोला, शिगरफ से निकाला हुआ
 पारद से तैयार कृत, ५) ४० तोला है ॥

चन्द्रोदय—यह एक प्रकार का रस सिन्धूर सोना मिश्रित है।
 सर्व औषधियों का राजा है। न केवल धानु सम्बन्धी सर्व रोगों की
 सर्वोत्तम औषधी है धरन उचित अनुपान से प्रत्येक रोग में बता
 जाता है। कई घर इस से बस गए हैं। बुधक्षित पारा से तैयार कृत
 का मुख्य १००) तोला, शुद्ध पारद से तैयार कृत १०) ४० तोला है ॥

तिला (लिंग तैल)

विशेषकर उन लोगों के घालने जो अपने हाथों अपना सत्यानाश कर चुके हैं पुष्टिकारक और शक्ति के साथ २ तिला (लिंग तैल) का होना भी आवश्यक है । परन्तु रमरण रहे, कि अकेला तिला बहुत कम लाभ करता है । बाह्यक मालिश से नसा पट्टे की सुस्ती दूर होकर चैतन्यता आती है । परन्तु जय तक आंतरिक बल की उत्पत्ति न हो, इस से कुछ नहीं हो सकता । तिला हमारे वहां बहुत प्रकार के तैयार होने रहते हैं । दो चार का नीचे वर्णन करते हैं ।

तिलाओं की साधारण सेवन विधि यह है कि—रात अथवा दिन के समय थोड़ा सा तेल लेकर उंगली से धीरे २ मालिश करें । यहां तक कि तैल भीतर सोख जावे तेल को ऊपर चमड़े पर लगाना चाहिये निचली सीधन नर्म होती है उसको बचाना चाहिये और जिनके खुतना होता है उनको सुपारो (लिंगमुख) भी बचाना चाहिए केवल ऊपर की खाल पर लगाना चाहिए । अगडकोप और प्रत्येक कोमल जगह बचाना चाहिए । क्योंकि अन्य रगानों पर लगाने से घाव होजाता है । तेल मालिश करने के पश्चात् भोजपत्र परिण्ड पत्र, या पान को पत्र बांध दें । यदि मूल से अगडकोप आदि पर लग कर घाव हो जायें तो घृत अथवा मक्खन के लगाने से यह कष्ट दूर हो सकता है तिला सेवन पथ्यन्तदन्दिशों में जल न लगने देना चाहिए । यदि राना करना हो तो तेल से भीगा हुआ लगेट बांध रखें ताकि पानी ऊपर ही से बह जाय । किंचित कू जाय तो परघाई भी नहीं । तिलाओं को ७ दिन लगाकर ७ दिन छोड़ना चाहिए इसी प्रकार जब तक आशा पूर्ण नहीं करना चाहिए ॥

मिलने का पता अमृतधारा लाहौर ।

तिला नं० १—इस सुगन्धि युक्त है। बूटों को भी खरब बना देता है, बूटों को विशेष रूप से गुणकारी है। हस्त मैथुन के शिथिल बूटों को और जो शौकिया बल बढ़ाना चाहे, यह तिला लाभदायक है। नसों पट्टों को बल देता है। साधारण फुन्सियाँ ली होती हैं कोई कष्ट नहीं होता। मुख्य ४ डराम ५), १ डराम १।)

तिला नं० २—यह तेज नहीं है और लग जावे तो डर नहीं है। इस मैथुन बालों को बिना उपाह के बड़ा लाभ पहुँचाता है। मुख्य २ डराम १) एक द०, नमूना १) चार पाना।

तिला नं० ३, तिलायमहत्—हस्तमैथुन कर्तारों को विशेष रूप से गुणकारी है। साधारण मन्थ्याओं में बहुत लाभ पहुँचाता है। साधारण फुन्सियाँ होती हैं। विशेष कष्ट नहीं। मुख्य ४ डराम १) नमूना =)

तिला नं० ४, तिलाय आयुर्मीन—यह बड़ा प्रचण्ड है। चर्म का एक परत उतार देता है। परन्तु हस्तकारों की नसों, पट्टों का बहुत शीघ्र ठीक करता है। ४ दिन के खेव न से ही बल प्रतीत होता है। किन्तु खाने की अच्छी औषधी भी साथ हो क्योंकि तिलाओं के प्रायः पौष्टिक औषधि का सेवन करना आवश्यक है। निराश रोगियों का हस्त से बहुत लाभ हुआ है, शिथिलता, व्यजमंगता, नपुंसकता दूर करके पूरा बल प्रदान करता है। इस की रचार वृन्द की मालिश करके रान का पचा वाश् दिरा कर। ४ दिन के भीतर ऊपर का चर्म बतर आवेगा फिर मोठर से नया चर्म आता है, जो बलवान होता है। बहुत ज्यादा कष्ट नहीं होता अधिक कष्ट अनुभव करेंगे तो मक्खन लगाने से शान्ति होती है ४ दिन के पीछे ७ दिन छोट कर फिर लगावे, इसी प्रकार दो चार बार करें। मू. व २ डराम ३), नमूना ॥१।

मिठन का परा—धमृतघारा लाहौर

तिला नं० ५—यह परत बरत कुछ नहीं उतारता न बहुत फूँसी होती है, जरा सी बूरी सी कमी निकलती है, कमी नहीं निकलती है परन्तु लोम तिला नं० ४ से कम नहीं करता है। १० दिन के लगाने से नमर्द मर्द होता है। मुख्य ४ डराम, ४) नमूना, १ डराम १)

तिला नं० ६ (लिंगवर्द्धक)—इस के लगाने से लम्ब और स्थूल होता है, तीव्र नहीं है, बहुत सा लगाना चाहिए गह्रा छेद होना चाहिए, इस में हींग $\frac{1}{2}$ भाग मिलाएँ तो और भी उत्तम है। मुख्य ४) रूप्य आधी शीशी २) रूप्य नमूना ॥)

तिलाय नं० ७ (उत्तेजनावर्द्धक),—आवश्यकता से १ घण्टा प्रथम लगाया जाता है, उस दिन अधिक चल आता है। सुखदायक भी है, जिसने एक बार भी आजमाया प्रसन्न हुआ, अर्द्ध दा १ माशा लेकर ६ माशा मधुमें मिलाकर, पर लगाकर कागज आदि देकर ऊपर बंध दे, एक बंटा पीछे ढोके दें, समय पर खूब घबरा भाव होगा जल्कि बढ जवेगी। मुख्य १ तोला ५), ६ माशा २॥) नमूना १ माशा ॥)

तिलाय नं० ८ अत्यानन्द दायक (सुलजिज्ञे शार्हा)—इसकी प्रशंसा क्या करें, जिसने एकबार भी आजमाया उसपर नोहिए हुआ, अत्यन्त आनन्द दायक, अत्यन्त सुगंधि युक्त, जहां हो मह्य आवे एत चावल प्रयात है। १ चावल से १ रत्ती तक सुपारी पर लगाने यदि अधिक इच्छा हो तो १-२ चावल ऊपर भी लगावे, परन्तु अधिक लगाने से हरी हो जलन होती है। एक दो बार मैं स्वयंसे प्रदाजा हो जायेगा, कि कितना लगाना चाहिये। अम्बर, कस्तूर केसर, इतर जैसी औषधियां हैं। इसलिये सुगंधि के निमित्त का

मिलने का पता—अमृतधारा लाहौर।

काही जगा सकते हो। मूल्य १ तोला २२), ३ माशा ३), रत्नना
२ माशा १=)

तिल्लाप, नं० ९ (आनन्द दायक)—यह भी प्रत्यक्ष आनन्द
दायक है, दोनों को आनन्द देवे है। इसी दायक भी है। एक पौड़ी
हस्तजागया मधु में बिसकर एक घंटा पहिले लेर करें, और जगा
रहने दें। मूल्य ३२ गोली २), १६ गोली १), नमूना १),

नं० १० लेप पौष्टिक व स्तम्भक—यह लेपन केवल
बलीकरय है, उन्वाई और रथूकठा प्रदान करता है, परन्तु स्तम्भनकारी
है। जो लोग स्तम्भन की औषधि खाना पसंद नहीं करते, उनके काम
नी बहुत है। स्तम्भन के वास्ते डेढ माशा के लगभग लेपकरके बांध
दें, एक घंटा पीचे पोंड दें। रोग निवृत्ति के लिये रात को लगाकर
प्रातः पोंड दिया करें या गरम पानी से धो दिया करे। मूल्य १ टोला
२६० नमूना १), चारप्राना

लेप नं० ११, (कामनी दायक)—नं० ८ के गुण है यह
धमोरो का है तो यह गरीवोंको। एक आध माशा नं० ८ की तरह लेप
करके कार्य में प्रवृत्त हो लगभग वही गुण है। मूल्य १), काशी
दोगी १),

तिल्ला नं० १२—इस का नाम तिला अशरी यह तिल्ला नं०
८ की भांति तेज है दो तीन चावल भर लेकर मालिश करें, और ऊपर
रक्त के पचे वान्ध दिया करें और बहुत ही सावधान रहें। पहले ही
दिन शक्ति प्रतीत होगी। अधिक कष्ट हो तो मक्खन लगा दें, चार
दिन लगा कर रात दिन छोड दिया करें, जो तकलीफ सहन कर

मिलने का पता—प्रभुतधारा डाहौर

करते हैं वह मंगलार्थ है । मुख्य पत्र शीशी २) इस से न्यून नहीं जा
जा सकता ॥

तिला नं० १३--यह भी नं० १२ की नकल है गुण भी जैसे
ही है । मुख्य पत्र शीशी २) इस से न्यून नहीं भेजा जा सकता ॥

तिला नं० १४--यह तिलाओं का राजा है और बहुत ही
गुणकारी है मुख्य ६) शीशी

तिला नं० १५--अत्यन्त आनन्द दायक है । यद्यपि नं० १६ की
भाँति लुगयित नहीं है । देखो तो तक की नीबल पहुँचती है । मुख्य
२) शीशी ॥

सिंहवस्त्रा--गोदा स्थान पर और सुरत स्थान पर भलते हैं, इन
की गोलियाँ तिला पर करने से नखों और पंखे पुष्ट होते हैं । यदि मधु
मिकाकर इसकी आठियाँ १) अष्टा-पक्षिते-कर-वक्-सं-आनन्द-दायक है
मुख्य २) तोषा, ६) अष्टा 10) आठ आना

रिचन्द्रवस्त्रा--कण्ठम उपरोक्त गुण हैं, मुख्य ॥ आठ आना तोषा

पत्राधी प्रेस लाहौर में छपा ।

मिठने का पत्ती-मदितवीरो लाहौर ।

